वे घटनाएं जो भारत में होंगी

अल्फा और ओमेगा

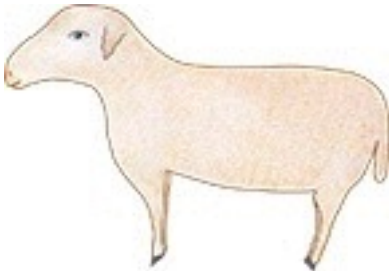

वे घटनाएं जो भारत में होंगी; जैसा कि लिखा गया था, दिव्य सत्य पूर्व में शुरू होकर पश्चिम तक फैलता है; भारत में दोबारा जन्म लेने वाली आत्माओं को दिव्य लंबित पुरस्कार मिला था; लेकिन, उन्हें पाने में समर्थ होने के लिए, उन्हें अपनी जीवन की परीक्षाओं में केवल एकमात्र परमेश्वर को मानना चाहिए था; जिसने भी कई परमेश्वरों को पूजा, उसने परमेश्वर में अपने विश्वास को कम किया; परमेश्वर के पुत्रों के ये विचित्र उपासक, स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं पायेंगे; उन लोगों के स्वर्ग के साम्राज्य में जाने की संभावना ज्यादा है, जो केवल एक परमेश्वर को पहचानकर, अपने आप में एक हो गए.-

ऐसा ही है पुत्र; परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में सदियों से घोषित घटनाक्रम भारत में होंगे; दिव्य पिता यहोवा, पूर्व से पश्चिम का क्या अर्थ है? जिसे हम आपकी दिव्य कृपा से

आपकी दिव्य धर्मशिक्षा में पढ़ते हैं; इस दिव्य चेतावनी का अर्थ है, प्रवास की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक घटित होगी, जिसे आज तक मानव नेत्रों ने पहले कभी नहीं देखा है; इसका अर्थ है कि पूर्व में परमेश्वर के पुत्र के होने के कारण, अपने भौतिक पुनरुत्थान की आशा में पश्चिम पूर्व की ओर स्थानांतरण करेगा; और पश्चिम से इतने सारे लोगों के आने से पहले, पूर्व राजनयिक माध्यमों से विरोध करेगा; प्रत्येक आत्मा के बल के कारण मानवता के सामान्य आधार अपना साँचा तोड़ते हैं, जो अपनी खुद की अनंतता की खोज में जाता है; भौतिक पुनरुत्थान बुजुर्ग लोगों, वयस्कों का बारह साल के बच्चों के रूप में रूपांतरण है; इस रूपांतरण के नियम को परमेश्वर की धर्मशिक्षा में, प्रत्येक मनुष्य के पुनरुत्थान के रूप में बताया गया है; दिव्य पिता यहोवा, जो सब जानते हैं, भारत दिव्यता का सम्मान क्यों करता है? इसका क्या कारण है? मैं आपको बताऊंगा पुत्र, क्योंकि ज्ञान का दिव्य प्रकाश आ चुका है, जिसका अनुरोध मानवता ने स्वयं स्वर्ग के साम्राज्य में किया था; भारत की आत्माओं ने सच्चे परमेश्वर की दिव्य महिमा को हमेशा प्रतिबंधित किया है; वे अनंत अस्तित्वों से यही करते आ रहे हैं, और जब तक वे ऐसा करते रहेंगे, वे परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते; स्वर्ग का साम्राज्य ब्रह्माण्ड के उन सभी लोगों के लिए परिपूर्ण है जिन्होंने अपनी आस्था के रूप में छवियों की उपासना की; संपूर्ण संसार को ऐसा ना करने की चेतावनी दी गयी थी; यह लिखा गया था: आप चित्रों, मंदिरों या किसी भी सादृश्य की उपासना नहीं करेंगे; दिव्य पिता यहोवा, किसी सादृश्य का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है पुत्र कि किसी को मानव जाति के साथ कट्टर नहीं होना

चाहिए; ईश्वर के दूतों, पैगंबरों, मूर्तियों, राजा, रईसों, सुल्तानों आदि किसी के भी साथ नहीं; क्योंकि वे सब भी परमेश्वर के दैवीय न्याय के अधीन हैं; जो कहा गया है उसे मत भूलना पुत्र: और वह मृत और जीवित का न्याय करेगा; जिसका अर्थ है कि कोई बच नहीं सकता; यहाँ तक कि मृत या जीवित का एक अणु भी नहीं; जो कोई भी जीवन की परीक्षाओं में मनुष्यों के साथ कट्टर बनता है, उसे उसके पापों को भी भोगने का जोखिम उठाना होगा, जिसे उसने अपने जीवन के सूक्ष्म रूप में इतना सराहा है; यह हमेशा होता है, जब प्राणी किसी प्राणी के लिए धर्मांध हो जाता है; जब वह ब्रह्माण्ड के वास्तविक रचयिता को भूल जाता है तो वह हमेशा एक घटनाचक्र में पड़ जाता है; दिव्य पिता यहोवा, ब्रह्माण्ड के अनंत संसारों के बीच पृथ्वी की क्या पहचान है? यह कितना उत्कृष्ट प्रश्न है पुत्र, क्योंकि प्रत्येक ग्रह पर प्रत्येक दिव्य आदेश से, इसके प्राणियों की आस्था के प्रकार की गुणवत्ता का जन्म होता है; पृथ्वी खरबवां, खरबवां, खरबवां ग्रह है, जो दिव्य सौर माता ओमेगा के गर्भ से बाहर आया था; पृथ्वी परीक्षाओं का ग्रह है जो सूक्ष्म जगत से संबंध रखता है; अन्य संसारों की तुलना में पृथ्वी इतना छोटा है कि व्यक्ति कह सकता है कि लगभग कोई भी पृथ्वी को नहीं जानता; इसे मेरी दिव्य धर्मशिक्षा में इस रूप में घोषित किया गया है कि: आप धूल से बने हैं और धूल में ही मिल जायेंगे; या यह भी कि: आप सूक्ष्म संसार से हैं, और सूक्ष्म संसार में वापस चले जायेंगे; और मैं आपको बताता हूँ पुत्र कि पृथ्वी के सूक्ष्म होने के अलावा, पृथ्वी सूक्ष्म-पृथ्वी की अपनी वर्तमान ज्यामिति के अंदर एक सूक्ष्म प्राणी था, वो कैसे पिता यहोवा? मैं आपको समझाता हूँ पुत्र: वह दिव्य

दृष्टान्त जो कहता है: स्वर्ग के साम्राज्य में महान बनने के लिए व्यक्ति को विनम्र होना पड़ता है, इसका अर्थ है कि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक आत्मा सूक्ष्मजीव थे; पृथ्वी साथ ही साथ आत्मा, दोनों अदृश्य से दृश्यमान में जन्में हैं; कोई भी जन्म से विशाल नहीं है; प्रत्येक विशालकाय वस्तु जिसे हम देख सकते हैं, वह सूक्ष्म थी; और प्रत्येक सूक्ष्म वस्तु विस्तारी चुंबकत्व के माध्यम से अति-विशाल बन जाती है; अब मुझे समझ आया दिव्य पिता यहोवा कि दिव्य धर्मशिक्षा विनम्रता पर बल क्यों देती है; मैं आपका दिव्य मन पढ़ सकता हूँ पुत्र; और मैं आपको बताऊंगा कि परमेश्वर के दिव्य आदेश भौतिक पदार्थों के साथ-साथ आत्मा के लिए भी हैं; यह अविनाशी परमेश्वर की दिव्य समानता है; पदार्थ के नियमों में, परमेश्वर पदार्थ से बोलवाते हैं, और आत्मा के नियमों में, आत्मा बोलती है; परमेश्वर के सामने कोई छोटा नहीं है; ना ही पदार्थ और ना ही आत्मा; क्योंकि उसका शासन प्रत्येक के लिए है; अभिमानी आत्माएं उसे अस्वीकार करती हैं जिसे वे अब तक नहीं समझ पाए हैं; उनके विकास के लिए परमेश्वर उनकी परीक्षा लेते हैं; क्योंकि यह लिखा गया है कि परमेश्वर द्वारा हर आत्मा की परीक्षा ली जाती है; मैं यह देख सकता हूँ पुत्र कि आप पृथ्वी के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक हैं; मैं आपको बताऊंगा पुत्र, जैसा कि आप इसे अपने मानसिक रंग दृश्यों में देखते हैं, पृथ्वी ट्रिनो आकाशगंगा से संबंधित है; पीले सूर्य का समस्त स्थान, जिसे आँखें देख सकती हैं, ट्रिनो है; और ट्रिनो की कोई सीमा ना होने के कारण, विचारशील व्यापक ब्रह्माण्ड में कोई भी ट्रिनो को नहीं जानता; दिव्य पिता यहोवा, व्यापक विचारशील ब्रह्माण्ड का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है

पुत्र कि दैनिक रूप से उत्पन्न होने वाले प्रत्येक मानसिक विचार से, सूक्ष्म ग्रहों की उत्पत्ति होती है; प्राणियों द्वारा उत्पन्न मानसिक विचार, समाप्त नहीं होते; विचार एक ओमेगा तरंग है जो अदृश्य रहते हुए, बड़ी होती है और अनंत समय गुजरने के बाद, अति-विशाल ग्रह में बदल जाती है; ऐसा कोई विचार नहीं है जो भविष्य में संसार नहीं बनता है; और मैं आपको बताता हूँ पुत्र कि वे स्वर्गीय यान जिन्हें पृथ्वी की संताने उड़न तश्तरियां कहते हैं, उनका उद्देश्य होता है अच्छे विचारों को बुरे विचारों से अलग करना; इसी कारण से मनुष्य को स्वयं को जानने की सलाह दी गयी थी; और केवल अच्छे विचार उत्पन्न करने के लिए कहा गया था; क्योंकि जिन्होंने बुरे विचार उत्पन्न किये, उन्होंने अपने लिए बुराई के भावी ग्रहों का निर्माण किया; और चूँकि वे ग्रह उसके अपने सूक्ष्म विचारों से बाहर आये थे, इसलिए आत्मा को स्वयं उन ग्रहों को आगे बढ़ाने के लिए मसीह के रूप में जाना होगा; क्योंकि परमेश्वर के दिव्य न्याय में, जो नुकसान पहुँचाता है, वही उसे ठीक भी करता है; और वे लोग जो किसी को थोड़ा सा भी नुकसान नहीं पहुंचाते, उनके स्वर्ग के साम्राज्य में जाने की संभावना ज्यादा होती है; और जिसने अच्छे विचार उत्पन्न किये, उसने अपने खुद के लिए स्वर्गीय-ग्रहों का निर्माण किया, जिनका भावी सांसारिक दर्शन दयालुता होगा; यह विचारों के इस सूक्ष्म नियम के लिए है, जो लिखा गया है: प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों से अपने लिए स्वयं स्वर्ग का निर्माण करता है; क्योंकि ब्रह्माण्ड में मौजूद सभी प्राणी विचार उत्पन्न करते हैं, और इस प्रकार वे अपने मानसिक आयामों के अंदर योगदान देकर ब्रह्माण्ड को कभी समाप्त नहीं होने देते;

संतानों को परमेश्वर की दिव्य विरासत मिली है; तदनुसार, वे ग्रहों के रचयिता हैं; दिव्य पिता यहोवा अति-विशाल रूप में ग्रहों का निर्माण करते हैं, जिनके आयामों में ना तो प्रारम्भ होता है और ना ही अंत; और उनकी संताने सूक्ष्म रूप में निर्माण करती हैं; इसलिए कहा गया है कि: जो ऊपर है वो नीचे के ही समान है; जो व्यक्ति अपने कार्य के इस दिव्य विस्तार के नियम पर विश्वास नहीं करता है उसे स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं मिलेगा; और उसे दोबारा सूक्ष्मजीव के रूप में शुरुआत करनी होगी; अब मैं समझ गया दिव्य पिता यहोवा कि क्यों मनुष्यों को अपने खुद के उद्गम के बारे में कभी पता नहीं चला, ना तो उनके और ना ही ग्रह के; उन्होंने उस विज्ञान की कभी कल्पना नहीं की जिसने अदृश्य में प्रवेश किया; और दिव्य आदेश: खुद को जानो, ने इसे घोषित किया; अब मुझे विनम्रता का अनंत अर्थ समझ आ गया; नैतिकता की समझ से, मुझे विज्ञान समझ आ गया; अब मैं समझा कि जीवन की परीक्षाओं में मनुष्य क्यों विफल हुआ; और मैं यह भी समझ गया कि यह घटनाचक्र उन लोगों से प्रारम्भ हुआ जिन्होंने संसार के लिए नियमों का निर्माण करने का प्रयास किया; वे कितने गलत थे! यदि उन्हें यह नहीं पता था कि खुद को कैसे जानना है तो वे दूसरों के लिए नियम बनाने के लिए तैयार नहीं थे; ऐसा ही था पुत्र; यह उनकी गलती थी; वे खुद को और दूसरों को नहीं जानते थे; इसलिए यह लिखा गया था: अंधे दूसरे अंधों का नेतृत्व कर रहे हैं; उनकी वजह से जिन्होंने त्रुटिपूर्ण नियम बनाएं, जिसमें आध्यात्मिकता और नैतिकता के बीच कोई सामंजस्य नहीं था, उनके नियमों के विचित्र प्रभाव के साथ रहने वाला एक भी मनुष्य

दोबारा परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश नहीं करेगा; ना ही किसी ने आज तक प्रवेश किया है; व्यक्ति उसी निष्कपटता के साथ स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश करता है जिसके साथ वह बाहर आया था; स्वर्ण में रूचि रखने पर आधारित, अजीब और अज्ञात जीवन प्रणाली, जिसे मनुष्य ने खुद को दिया, जीवन में, बच्चों के समान निष्कपटता रख पाने में असमर्थ थी; मनुष्यों की विचित्र जीवन प्रणाली ने संसार को रिवाज़ और उत्तेजनाएं दी, उनमें से किसी को भी परमेश्वर से नहीं माँगा गया था; इसलिए इसे विचित्र और अज्ञात जीवन प्रणाली कहते हैं; क्योंकि परमेश्वर से कुछ भी अनुचित, असमान, या असंतुलित नहीं माँगा गया था; जीवन की परीक्षाएं जिसे मनुष्य ने परमेश्वर से माँगा था, कम-कम समय में उनके एकीकरण के लिए थी; क्योंकि जो एकीकृत होता है वो परमेश्वर से है; जो अलग होता है वो शैतान से है; मनुष्यों द्वारा चुनी गयी विचित्र जीवन प्रणाली आत्माओं के लेनदेन से प्राप्त की गयी थी; दुनिया को उन व्यक्तियों द्वारा चलाया जाता रहा है जो स्वर्ण के लोभ से ग्रस्त थे; वे ऐसे विचित्र लोभ से छुटकारा पाना नहीं जानते थे; उनकी महत्वाकांक्षाएं असमान नियमों पर आधारित थी, जिसने संसार को विभाजन की ओर आगे बढ़ाया; और बहुत सारे लोग सो गए; इसके लिए यह लिखा गया था कि: प्रत्येक आत्मा जीवन में सोती है; मनुष्य अपने अधिकारों की रक्षा के संबंध में सोते हैं, वे शांति चाहते हैं, और हथियारों को सराहते हैं; कोई भी मरना नहीं चाहता, और वे अपने हथियारों को बेहतर बनाकर खुद को मृत्यु के सामने खड़ा करने का बखान करते हैं; इस विचित्र संसार का पतन अच्छाई और बुराई पर आधारित था; केवल एक मालिक की

सेवा करने के बजाय, उन्होंने दोनों को अपना मालिक बनाया; और दो मालिकों की सेवा करने के कारण, वे विभाजित हुए और निरंतर इस पूरे ब्रह्माण्ड में घूमते रहे, और इस प्रकार वे दोबारा कभी स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सके; और परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए उन्होंने अनंत प्रयास किये; जबसे मनुष्य एक सूक्ष्म जीव के रूप में उत्पन्न हुआ है, तब से वह दोबारा परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है; यह सूक्ष्म से विशाल तक, सबसे अनंत आकारों के, परीक्षाओं के असीम ग्रहों से गुजरा है; धूल से लेकर विशालकाय ग्रह तक; लेकिन, चूँकि जो परमेश्वर का है वो असीम है, इसलिए मनुष्य धूल बनता रहा है; और परीक्षाओं के निर्धारित ग्रह पर उसका पहले से प्राप्त ज्यामिति आकार रुक जाता है, तब मनुष्य ने परमेश्वर के दिव्य नियम का उल्लंघन किया; वर्तमान में उसके साथ यही हुआ है; और जब भी दो या दो से अधिक मालिकों की सेवा की जाती है तो विकास अपने आप रुक जाता है; स्वर्ग के साम्राज्य में केवल उसे ही प्रवेश मिलता है जो सभी प्रकार से अपनी आस्था के साथ केवल एक परमेश्वर की उपासना करता है; उसे प्रवेश नहीं मिलता जो आस्था के माध्यम से उसे समझना नहीं जानता, जिसका उसने स्वयं स्वर्ग के साम्राज्य में अनुरोध किया था; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र, परमेश्वर को समझने में होने वाली इन कठिनाइयों को परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में पत्थर कहा गया है; मेरे पहले पुत्र ने कहा था: इस पत्थर पर मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा; उसका अर्थ था कि: इन मानसिक रूप से कठोर प्राणियों के विश्वास की मैं परीक्षा लूँगा, जिसे वे अपनी इच्छा से चुनेंगे; क्योंकि प्रत्येक

प्राणी के पास चुनने का अधिकार है; और उन्हें पत्थर कहकर, मेरे दिव्य पुत्र ने, उसी पुराने समय में देख लिया कि किस प्रकार संसार भविष्य में उल्लंघन करने वाला है; दिव्य पिता यहोवा, पहले पुत्र ने क्या देखा? उसने वो देखा जो वर्तमान मनुष्य जी रहा है; उसने भविष्य के अपने सौर टेलीविज़न में देखा कि किस प्रकार मनुष्यों से ग्रह को आलिशान मंदिरों और कलीसिया से भर दिया था; उसने देखा कि किस प्रकार मनुष्य उस दिव्य आदेश को भूल गया जो कहता है: आप किसी चित्र, मंदिर या सादृश्य की उपासना नहीं करेंगे; उसने देखा कि किस प्रकार उन्होंने चित्रों की पूजा की; उसने देखा कि कैसे उन्होंने नश्वर प्राणियों के पैरों को चूमा; उसने देखा कि कैसे एक अजीब संप्रदाय ने, हथियारों को सराहा, जिससे उनके अपने बच्चों ने एक-दूसरे की हत्या की; उसने अपने धार्मिक समारोह का शर्मनाक व्यापार देखा; और उन चीजों को देखने के बाद जो उसने नहीं सिखाई थीं, उसने यह कहा: मैं इस पत्थर पर मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा; सौर त्रिमूर्ति संतानों के भावी अनुभव को अपने रूप में बनाते हैं; यद्यपि उन्हें पता है कि संतान विफल होंगे; क्योंकि त्रिमूर्ति जानते हैं कि यदि वे एक अस्तित्व में विफल होते हैं तो दूसरे में सफल होंगे; क्योंकि प्रत्येक आत्मा एक नए जीवन को जानने के लिए दोबारा जन्म लेती है; जिसने अपनी आस्था और विश्वास से यह माना कि जीवन केवल एक है, वह जीवन की परीक्षाओं में विफल हो गया; परमेश्वर को सीमित करके उन्होंने अपना नाश कर लिया; क्योंकि अपने विचार का सम्मान करके, उन्होंने यह माना कि वे केवल एक अस्तित्व में रहेंगे; जो भी परमेश्वर को सीमित करता है, वह सीमित

होता है; जो परमेश्वर को अनंतता देता है, उसे अनंतता मिलती है; क्योंकि जीवन की परीक्षाओं में व्यक्ति जैसा सोचता है, उसे वैसा ही मिलता है; जब व्यक्ति परमेश्वर के लिए कुछ अस्वीकार करता है, तो आत्मा को वो कुछ दिखाई नहीं देता है; इसलिए यह लिखा गया था: आपके कार्यों से आपको आँका जायेगा; और मनुष्य के प्रत्येक कार्य को आणविक रूप से आँका जायेगा; दिव्य पिता यहोवा, आणविक रूप से का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है पुत्र कि परमेश्वर का दिव्य न्याय उन्हीं विचारों से प्रत्येक व्यक्ति का न्याय करेगा, जो उन्होंने बारी-बारी से, प्रत्येक भावना से, प्रत्येक गुण से, शरीर के प्रत्येक अणु से जीवन में उत्पन्न किये हैं; प्रत्येक आह से, प्रत्येक बाल से, प्रत्येक नेत्र से, प्रत्येक कान से, प्रत्येक दांत से; सभी चीजों को शामिल करने वाले इस दिव्य न्याय को परमेश्वर के दिव्य न्याय में घोषित किया गया है, जिसे उनकी दिव्य धर्मशिक्षा में लिखा गया है ; यह लिखा गया है कि; आपको सबसे आधार पर आंका जायेगा; सबके आधार पर, वह कुछ भी नहीं छोड़ता है; यह व्यक्ति का सबकुछ होता है, जो अनेकों सूक्ष्म रूपों में बदलता है, जिसे स्वयं परमेश्वर के पुत्र द्वारा बड़ा किया जायेगा; उनकी दिव्य सौर क्रिया, उन सभी चीजों को बड़ा करेगी जो सूक्ष्म है; इसलिए यह कहा गया है: हर आँख देखेगी; सभी लोग वो देखेंगे जो उन्होंने अपने जीवन में नहीं देखा; सभी लोग उन सभी चीजों को भौतिक रूप से देखेंगे, जिन्हें उन्होंने केवल भावनाओं में जाना है; तो वे लोग जिन्हें तस्वीरों के माध्यम से परमेश्वर की आराधना करने की अजीब आदत थी, उनके अणुओं को नहीं गिना जायेगा, जो ऐसे तस्वीरों में शामिल थे; तस्वीर के प्रत्येक अणु के लिए, वे

प्रकाश का एक अस्तित्व गँवा देंगे; अणु-सेकंड का नियम आ गया है पुत्र; मैं आपको बताना चाहता हूँ पुत्र कि ज्यादातर सूक्ष्म मानसिक और शारीरिक प्रयास को परमेश्वर द्वारा अनंत रूप से पुरस्कृत किया जायेगा; क्योंकि परमेश्वर की कोई सीमा नहीं है; मानवता से कहा गया था कि परमेश्वर अनंत हैं; इसलिए, किसी को इस बात से हैरान नहीं होना चाहिए कि एक सेकंड या एक अणु, प्रकाश के एक अस्तित्व के बराबर होता है; और जो यह जानकर हैरान होंगे कि अपने जीवनकाल के दौरान वे परमेश्वर के सूक्ष्म या तुच्छ सिद्धांत के अधीन थे, वे खुद से विश्वासघात करेंगे; जिन लोगों का परमेश्वर का सिद्धांत सीमित है, जिनकी संख्या लाखों में है, वे दोबारा स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे; क्योंकि परमेश्वर से ऐसी विचित्र हैरानी नहीं मांगी गयी थी; उनकी हैरानी उस विचित्र निद्रा को उजाकर करती है जो उन्होंने अपने जीवन की परीक्षाओं के दौरान ली है; वे जागरूक नहीं थे, वे जगे हुए नहीं थी, उन्होंने अपनी ही भावनाओं को नहीं जाना; उन लोगों के स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश करने की संभावना ज्यादा है जो उस बात से हैरान नहीं थे जिसका उन्होंने स्वयं प्रकाश के साम्राज्य में अनुरोध किया था; परमेश्वर के अनंत में आश्चर्य किसी ने नहीं माँगा था; क्योंकि कोई भी उसपर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहता जो प्रत्यक्ष है; मैं आपको पृथ्वी के बारे में आगे बताऊंगा पुत्र; कृपया बताएं दिव्य पिता यहोवा; आपकी दिव्य इच्छा सत्य में बदले; पृथ्वी परीक्षाओं का ग्रह है; अनंत आकाशगंगा से आने वाली आत्माएं यहाँ पायी जाती हैं; इसका अर्थ है कि मनुष्य उन प्रभावों के अनुसार सोचते और कार्य करते हैं जिसे वे अपने प्रभाव के स्थानों से लाये हैं;

आदतें उन स्थानों पर बनती हैं जहाँ कोई व्यक्ति रहता है; प्रकाश की जीवन प्रणाली के सामने यहाँ प्रत्येक विचारशील प्राणी के व्यवहार की व्याख्या की गयी है; मानव जीवन का अनुरोध इसलिए किया गया था क्योंकि यह अज्ञात था; मनुष्य परमेश्वर से वो जानने का अनुरोध करता है जो अज्ञात है; और जब बिलकुल अज्ञात आत्माएं जीवित होती हैं तो वे नियमों का अनुरोध करती हैं; क्योंकि अपने व्यक्तिगत अनुभव से वे जानते हैं कि अराजकता और मनमानेपन से वे कहीं नहीं पहुंच सकते; उनमें से कोई उत्तमता बाहर नहीं आती है; इसका अर्थ है कि उस प्रत्येक जीवन प्रणाली में जिसमें स्वच्छंदता शामिल है, और जिसमें उसके प्राणी अपनी जीवन प्रणाली बनाने का निर्णय लेते हैं, वे परमेश्वर के सामने विफल होते हैं; क्योंकि उनका विकास मनमानेपन पर विजय पाने के लिए तैयार नहीं है; क्या आपको यह अपने ग्रह में नहीं दिखाई देता? ऐसा ही है दिव्य पिता यहोवा; जब मैं छोटा था तबसे, मैं देख रहा हूँ कि इस मनमानेपन को लोगों द्वारा स्वतंत्रता का नाम दिया जा रहा है; और मैं देखता हूँ कि यह विचित्र तथ्य, उन्हें विकृत और पतित बनाता है; ऐसा ही है पुत्र; इसका अर्थ है परमेश्वर के समक्ष विफलता; क्योंकि उन्होंने ग्रह के सिद्धांत से जीवन प्रणाली गठित नहीं की; मैं आपको बताऊंगा पुत्र, कि जब संताने मुझसे परीक्षाओं के दूरस्थ ग्रहों पर जाने का अनुरोध करती हैं तो वे मुझसे ऐसे ग्रहों को एकीकृत पूर्णता के साथ बनाने का वादा करते हैं; उन्हें पता था कि स्वर्गीय पिता, हमेशा से ब्रह्माण्ड के एकीकरण को लेकर चिंतित थे; और संताने अपनी सूक्ष्म विचार की श्रृंखलाओं में हमेशा से अपने पिता का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं; प्रत्येक मानव

आत्मा ने स्वर्ग के साम्राज्य में देखा कि जो भी साम्राज्य से था वो ब्रह्माण्ड में सबसे उत्तम था; सभी ने देखा कि स्वर्गीय आनंद, सामान्य नियमों, अर्थात समाधिकारी नियमों पर आधारित है, ऐसे नियम जिनमें सबसे छोटा भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है जितना कि सबसे बड़ा; पुत्र, क्या ऐसा कुछ आपके ग्रह पर होता है? कितनी शर्म की बात है दिव्य पिता यहोवा; क्योंकि यहाँ व्यक्ति को उसके पास मौजूद संपत्ति के आधार पर महत्ता मिलती है; महत्ता एक विचित्र आधिपत्य की अधीनता में है; ऐसा ही है पुत्र; इस प्रकार आध्यात्मिक अभाव कार्य करता है; इसलिए किसी को भी स्वर्ण के प्रभाव में नहीं आना चाहिए, क्योंकि इससे प्रभावित होने के बाद कोई स्वर्ग के साम्राज्य में दोबारा प्रवेश नहीं करेगा; वास्तव में, लोभ से ग्रस्त कोई भी व्यक्ति इसमें प्रवेश नहीं करता है; मनुष्य के जीवन की परीक्षाओं में सभी ग्रहों के लिए समान सिद्धांत बनाना, और एक बच्चे की विचारशीलता बनाये रखना शामिल है; व्यक्ति को अपनी सरलता का ध्यान रखना चाहिए; क्योंकि सरलता या निष्कपटता के बिना, कोई भी स्वर्ग के साम्राज्य में दोबारा प्रवेश नहीं करता है; यह मनुष्य जाति की त्रासदी थी पुत्र; मनुष्य ने अल्पकालिक चीजों पर अपनी उम्मीद बनाई और अपनी सरलता को अनदेखा किया; यह त्रासदी अपने आपको कई बार दोहराती रही है; ऐसा ही पत्थर का व्यवहार होता है; आध्यात्मिक पत्थर को अपना विकास आगे बढ़ाने में सक्षम होने के लिए परीक्षाओं के लाखों ग्रहों पर दोबारा जन्म लेना पड़ता है और जीना पड़ता है; यह सूक्ष्म बनने से शुरू हुआ था; दिव्य पिता यहोवा, ऐसी कठोरता का क्या कारण है? इसका कारण है पुत्र, अवज्ञा के लिए

आकर्षण की वो मात्रा, जिससे आत्मा अन्य संसारों से गुजरते हुए अपने आपको संतृप्त कर लेती है; बुराई के लिए आकर्षण की यह मात्रा, आत्मा का व्यक्तित्व बदल देती है; इसलिए, जब आत्मा लाखों ग्रहों पर बार-बार जन्म लेती है तो इसकी प्रकृति भी लाखों बार परिवर्तित होती है, इन असीम परिवर्तनों में, आत्मा को अपनी सरलता बनाये रखना सीखना पड़ता है; यह उसकी सबसे बड़ी परीक्षा है; जो संसारों से गुजरते हुए अपनी सरलता बनाये रखना सीख जाता है उसे स्वर्ग के साम्राज्य में सीधे प्रवेश मिल जाता है; जो यह नहीं करता, उसे अपनी उत्पत्ति के स्थान के लिए, स्पष्ट मार्ग नहीं मिलता है; ऐसा व्यक्ति बार-बार ऐसे स्थानों पर जन्म लेता है जो स्वर्ग के साम्राज्य से बाहर हैं; ऐसे स्थान जिन्होंने प्राणियों के लिए अनंत मात्रा में गुण प्राप्त कर लिए हैं, लेकिन अभी तक परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने योग्य नहीं हुए हैं; क्योंकि परमेश्वर से किये लिए अनुरोधों की बहुलता, एक दूसरी ऐसी चीज है जिसे मानव क्षमता समझ नहीं पाती; लेकिन उनमें सूक्ष्म प्राणियों को दोबारा जन्म देने की पर्याप्त क्षमता और शक्ति मौजूद होती है; धूल ग्रहों के प्राणी, जिनमें से एक पृथ्वी है; इसे स्वर्ग के साम्राज्य में, एक छोटे अनुक्रम के रूप में जाना जाता है; मनुष्यों की जीवन प्रणाली ने अपने नियमों में ब्रह्मांडीय चीजों को नहीं जोड़ा; जीवन प्रणाली के प्रमुख ने मनमाने तरीके से मनुष्यों को परमेश्वर को समझने दिया; और, परमेश्वर के संबंध में कभी कोई, ग्रह संबंधी सहमति नहीं थी, इस विचित्र विभाजन ने हज़ारों वर्ष समाप्त कर दिए, इसका मूल्य हर सेकंड के लिए उन्हें चुकाना पड़ेगा जिनकी वजह से यह हुआ है; समय में प्रत्येक सेकंड की असहमति के लिए, दोषी

मनुष्य प्रकाश का एक अस्तित्व खोते हैं; दिव्य पिता यहोवा, जो सबकुछ जानते हैं, इस ग्रह संबंधी घटनाचक्र में कौन दोषी हैं? सबसे बड़े दोषी वो हैं पुत्र, जिन्होंने स्वर्ण के विचित्र नियमों के आधार पर, इस जीवन प्रणाली में, नियम बनाये; उनपर दिव्य अंतिम निर्णय का तीन चौथाई पड़ेगा; शेष एक चौथाई उन लोगों पर पड़ता है जो अपने गलत मार्गदर्शकों से प्रोत्साहित हुए; अंधे दूसरे अंधों का नेतृत्व कर रहे हैं; उन लोगों के पतन को दैवीय रूप से घोषित किया गया है, जो चीजों में ज्यादा गहराई से प्रवेश किये बिना, उन्हें स्वीकृति देते हैं; वे सामान्य विकृत लोग हैं, जिनके पास कोई इच्छा नहीं है, यहाँ तक कि उन्हें अपनी आत्माओं के मोक्ष की भी इच्छा नहीं है; यह विचित्र दुनिया का विचित्र चरित्र था, जो स्वर्ण के विचित्र सिद्धांत से उत्पन्न हुआ; पाने की इच्छाओं के कारण, यह आध्यात्मिक विकृति थी; आत्मा की भावनाओं पर स्वर्ण के संबंध में भारत में विविधता थी; भारतीय लोग आध्यात्मिक मापन में बहुत अधिक आगे निकल गए; मनुष्य की कई मनुष्यों में शक्ति होने के नाते, ये अपने भौतिक कल्याण में कहीं पीछे रह गए हैं; इसके अलावा पुत्र, इन लोगों के पास सबसे महान पुरातनता है; जो पृथ्वी पर सबसे पुरानी है; यहाँ समय और विज्ञान और प्राप्त कल्याण के बीच विचित्र असंतुलन है; इस असंतुलन के लिए जिम्मेदार लोग प्रत्येक सेकंड और अणु के लिए मूल्य चुकाएंगे; क्योंकि भारत के वर्तमान पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार प्रत्येक दोषी प्रकाश का एक अस्तित्व खोता है; यही नियम उन लोगों पर भी लागू होता है जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिए अपने राष्ट्रों की प्रगति को रोका; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि राष्ट्रों के सभी नेताओं को परमेश्वर

के दिव्य न्याय में अपरिचित कहा जायेगा; उनके लिए यह लिखा गया था: विचित्र आचार-विचार; वास्तव में, परमेश्वर के दिव्य नियम का उल्लंघन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपरिचित कहा जायेगा; क्योंकि किसी ने भी जीवन की परीक्षाओं में परमेश्वर के दिव्य नियम का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं माँगा था; उन लोगों के स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश करने की संभावना ज्यादा होती है जो ऐसे किसी राष्ट्र को नहीं चलाते, जिसमें वह परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करेंगे; उन लोगों की तुलना में जो ऐसा करने की विचित्र स्वतंत्रता पा लेते हैं; मनुष्यों की जीवन प्रणाली को परमेश्वर ने कई सदियों पहले दण्डित कर दिया है; दिव्य पिता यहोवा, वो दिव्य दंड कैसा था? परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में लिखा गया था पुत्र: धनी व्यक्ति के स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश करने की तुलना में ऊंट का सुई के छेद से गुजरना ज्यादा आसान है; ना तो धनी व्यक्ति और ना ही वो प्रणाली जो धनी लोगों को उत्पन्न करती है, परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करते हैं; मैं समझता हूँ दिव्य पिता यहोवा धनी लोगों को उत्पन्न करने वाली प्रणाली को मनुष्य पूंजीवाद कहता है; क्या ऐसा है दिव्य पिता यहोवा? ऐसा ही है पुत्र; अपने जीवन की परीक्षाओं में मनुष्य द्वारा आजमाये गए सभी दार्शनिक प्रणालियों में से पूंजीवाद ही एकमात्र ऐसी प्रणाली है जो धनी लोगों को उत्पन्न करती है; और मैं देखता हूँ पुत्र कि परीक्षाओं के इस संसार में करोड़ों लोग, उस जीवन प्रणाली को सराहते और स्वीकारते हैं, जिसे सदियों पहले, परमेश्वर ने दंडित किया था; ऐसा ही है दिव्य पिता यहोवा; शर्म की बात है कि ऐसा ही है; मैं मानता हूँ कि ऐसे लोग पागल होते हैं; उनका मानसिक

संतुलन ठीक नहीं होता; क्योंकि कोई पागल ही परमेश्वर का विरोध करेगा; आप बिलकुल सही हैं पुत्र; जो व्यक्ति मेरे विरुद्ध रहता है, वो मेरे साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता; हाँ, वास्तव में वो अभिमानी होने के कारण पागल होते हैं; मुझे पता है पुत्र कि आपको यह बात बचपन से पता है; आपकी दिव्य कृपा से ऐसा ही है दिव्य पिता यहोवा; मैं उस महान क्षण को कैसे भूल सकता हूँ, जिसमें मैंने आपकी दिव्य कृपा से, अपने मन में आपकी दिव्य पुकार सुनी थी? हाँ पुत्र, मुझे याद है; क्योंकि वो सूक्ष्म अतीत परमेश्वर के लिए हमेशा से एक दिव्य उपहार है; यह मत भूलना कि अपने बनाये गए अनंत समयों में से चुनते समय अविनाशी परमेश्वर स्वर्गीय समय को चुनता है; इस स्वर्गीय समय के विषय में आप मुझे क्या बता सकते हैं पुत्र? मुझे याद है दिव्य पिता यहोवा कि बचपन से ही आपने मुझे सिखाया है कि एक स्वर्गीय सेकंड एक सांसारिक सदी के बराबर होता है; ऐसा ही है पुत्र; मैं देख रहा हूँ कि आपकी स्मृति विलक्षण है; आपकी दिव्य कृपा से, दिव्य पिता यहोवा; इसलिए यह कहा गया है कि परमेश्वर ने कुछ क्षणों पहले ही संसार का निर्माण किया था; क्योंकि उन्होंने स्वर्गीय समय का प्रयोग किया; सभी समयों के सभी ग्रह, जो पहले थे, जो अभी हैं और जो होंगे, वे सभी स्वर्गीय समय के अधीन हैं; क्योंकि जहाँ समय को बनाया गया है, उस स्थान पर कुछ और समय था; उस स्थान का समय, यह समय, स्वर्गीय समय था; सभी समयों के माता-पिता एक ही समय थे; क्योंकि मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि मेरी दिव्य रचना में किसी को भी उत्तराधिकार से वंचित नहीं किया गया है; ना ही पदार्थ और ना ही आत्मा, कोई भी उत्तराधिकार से

वंचित नहीं है; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि जहाँ तक पृथ्वी के समय की बात आती है, यहाँ समय के अंदर तीन समय हैं; समय को साम्राज्य में बनाया गया, और जिसने मानव आत्मा के साथ दिव्य गठबंधन का अनुरोध किया; इसके बाद समय के लिए परीक्षाओं का समय आता है; और आत्मा के लिए परीक्षाओं का समय आता है; और चूँकि किसी को भी उत्तराधिकार से वंचित नहीं किया है इसलिए प्रत्येक समय को समय के त्रिमूर्ति मिलते हैं, और जब मानव आत्मा ने परमेश्वर से जीवन माँगा, तब आत्मा ने पदार्थ से बात की; और उसके अंदर समय, अंतरिक्ष और दर्शन था; चूँकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, इसलिए उन्होंने अपने पदार्थ के नियमों में, पदार्थ से बोलवाया; और अपने आत्मा के नियमों में, आत्मा से; इसलिए यह कहा गया था: परमेश्वर का जीवित ब्रह्माण्ड; जीवन की परीक्षाओं में परमेश्वर से कोई अधिकार ना लेना शामिल है; लेकिन, कइयों ने ऐसा किया; ना केवल इस जीवन में, बल्कि कई नए जीवनों में भी; और जो अपनी राय से इसे परमेश्वर से लेता है, उसे इसे परमेश्वर के दिव्य न्याय में भी उससे लेना होगा; पृथ्वी की आत्मा के चरित्र का वर्णन करने वाली आत्मिक अधमता के तीन कारण हैं; पहला कारण है बहुत कम विकास, जो जीवन की परीक्षाओं से आत्मा में हुआ है; दूसरा कारण है जो परमेश्वर का है उसके संबंध में स्वयं माता-पिता का मानसिक परित्याग; सांसारिक माता-पिता जिन्होंने कभी अपने बच्चों को परमेश्वर के नियमों की शिक्षा नहीं दी; और तीसरा कारण आत्मिक अधमता, स्वयं प्राणी का परमेश्वर को ना समझ पाना है; इन तीन शैतानी कारणों ने मानवता को एक विचित्र निद्रा में डाल

दिया है; ऐसी निद्रा जिसने मानव अधिकारों की रक्षा को प्रभावित किया; यह निद्रा उन अधिकारों की अवहेलना है जिन्हें स्वर्ग के साम्राज्य में माँगा गया था, और पिता से पुत्र में और पीढ़ी दर पीढ़ी में संचारित किया गया था: संचारित होने पर; इसे वैधानिक चीज के रूप में प्राप्त किया गया; परमेश्वर का दिव्य न्याय जीवन की परीक्षाओं में मानवता प्रदर्शित करेगा, जिसे वैध समझा गया था वो अवैध था; भ्रम के प्रभाव में परमेश्वर के नियम का उल्लंघन हुआ, जो मनुष्य द्वारा आदर्श रूप में प्रस्तुत की गयी जीवन प्रणाली से आया; जो तुच्छ था उसे देवता माना गया और अविनाशी परमेश्वर को भुला दिया गया; विचित्र जीवन प्रणाली के रचियताओं ने सूक्ष्म वर्तमान के अंदर मानव के आदर्शों को बंद करने का प्रयास किया; दूरस्थ आकाशगंगा से अपनी आत्माओं में विचित्र प्रभाव लाने वाले व्यापारियों ने उन्हें अपने सोचने के तरीके और नियम सिखाये, जिससे उन्होंने जीवन प्रणाली को आदर्श बनाया; निश्चित रूप से जो स्वर्ण से ज्यादा प्रभावित थे, वे जीवन प्रणाली बनाने के लिए कम योग्य थे; उनमें कोई उत्तमता नहीं थी; वे केवल लाभ कमा सकते थे; लेकिन, उन्होंने कभी अपने आपको बराबरी में नहीं आने दिया; अपनी कमियों में, वे भयभीत, कायर, उत्पीड़क थे, और जिनका अंतिम उपाय बल था; ऐसे शैतानी गुणों वाले, ये व्यर्थ प्राणी संसार की प्रसन्नता का कभी आश्वासन नहीं दे पाए; इसलिए सदियों से अनंत पृथ्वी पर अपने आने की उम्मीद कर रहे हैं, और उन्होंने उन्हें दण्डित किया; वो सोचते हैं कि जो उनका है वो अविनाशी है; वे यह भूल गए कि यह बस उनकी परीक्षा है; इसका अर्थ है कि जीवन की परीक्षाओं में होने पर, किसी मानव आत्मा

में, दोबारा मानव बनने की निश्चितता नहीं होती है; यह सब केवल इस बात पर निर्भर करता है कि प्रत्येक आत्मा ने अपने जीवन की परीक्षा में कैसा प्रदर्शन किया; सबकुछ प्रत्येक मनुष्य द्वारा किये गए आणविक कार्य पर निर्भर करता है; उन सभी को चेतावनी दी गयी थी कि परमेश्वर देता और वापस ले लेता है; इसमें जीवन देना और वापस लेना भी शामिल है; और उनके लिए दोबारा मानव के रूप में जन्म लेने की संभावना ज्यादा होती है जिनका स्वर्ण की तरफ झुकाव होने के बावजूद, उन्होंने जीवन प्रणाली के निर्माण में सहयोग नहीं दिया; उनकी तुलना में जो लालच में पड़ गए; अपने लिए ज्यादा पाने की चाह रखने वाले मनुष्यों को जिम्मेदारी का पद लेने की सलाह नहीं दी जाती है; क्योंकि ऐसा करते समय, वे करोड़ों मनुष्यों के दर्द और अन्याय का कारण बनते हैं; और जिन लोगों ने सर्वश्रेष्ठ ना होते हुए भी पद संभाल रखा है उनके लिए अपने पदों का त्याग करना ही उचित होगा; और उन्हें इसे उन लोगों के लिए छोड़ देना चाहिए जो उनसे ज्यादा समर्थ हैं; क्योंकि प्रत्येक बीतते हुए सेकंड के साथ, ये त्रुटिपूर्ण लोग, प्रकाश का एक अस्तित्व खो रहे हैं; दिन-रात, प्रत्येक क्षण, वे प्रकाश का अस्तित्व खो रहे हैं; परमेश्वर का दिव्य न्याय, पदार्थ और समय में आणविक है; और यह सभी बनाई गयी चीजों के लिए समाधिकार का कानून है; दिव्य पिता यहोवा, समाधिकार का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है पुत्र, कि उल्लंघन के एक सेकंड या एक अणु या प्रकाश का परमेश्वर के कानून में समान मूल्य है; इसलिए दयालुता का एक सेकंड प्रकाश के भावी अस्तित्व के बराबर है; और एक सेकंड की बुराई अंधकार के भावी अस्तित्व के बराबर है; इसे स्वर्ग

के साम्राज्य में, दिव्य न्याय का समाधिकार नियम कहते हैं; और मानव जीवन में प्रवेश करने से पहले मानव जाति ने ही परमेश्वर से इस न्याय की मांग की थी; और उन्होंने ना केवल कोई कार्य करने के लिए इसे न्याय के रूप में माँगा था, बल्कि उन्होंने इसे अपनी जीवन प्रणाली में जीने का भी वचन दिया था; क्योंकि जो भी परमेश्वर का है वो अतुलनीय है; मनुष्य ने इस वचन को पूरा नहीं किया; मनुष्य राष्ट्रों में बंट गया; विभाजन की यह विचित्र गतिविधि परमेश्वर को कभी पसंद नहीं थी; क्योंकि अनंत ने स्वयं उन्हें चेतावनी दी थी कि केवल शैतान विभाजन करता है और अंत में खुद को विभाजित कर लेता है; और ऐसा करते हुए, उसके पास स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश करने का अवसर भी कम होता है; परमेश्वर की दिव्य चेतावनी का मानव नियमों में ध्यान नहीं दिया गया; दिव्य पिता भी मानवता का विभाजन करने वालों पर ध्यान नहीं देंगे; अनंत की अपेक्षा करते हुए, मनुष्य के देशद्रोह के लिए उन्होंने अपनी दिव्य धर्मशिक्षा में यह दंड दिया था: और वहां रोना और दांतों का पीसना होगा; मनुष्यों के सभी आगामी पतनों को स्वयं दिव्य धर्मशिक्षा में घोषित किया गया है; क्योंकि परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में लिखा गया है कि स्वयं मनुष्य ने परमेश्वर से परीक्षाओं की मानसिकता में स्वयं को चेतावनी देने का अनुरोध किया था.-

लेखक: अल्फा और ओमेगा

N° 3426

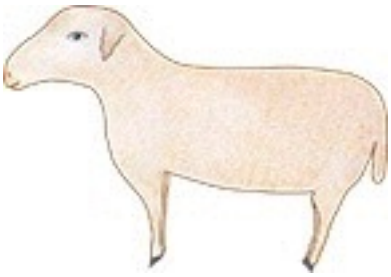

वे घटनाएं जो भारत में होंगी...

प्रत्येक मनुष्य के पुनरुत्थान से संबंधित घटनाएं भारत में होंगी; दिव्य पिता यहोवा, मनुष्य के पुनरुत्थान की प्रक्रिया कैसी होती है? यह एक दैवीय प्रक्रिया है जो आत्मा को पुनर्जीवन देने के समान होती है; अपनी सौर क्रिया से सौर पुत्र मसीह, मनुष्य के दिव्य करुब(स्वर्गदूतों) को आदेश देंगे; मैं जो तुम्हें बता रहा हूँ पुत्र वो मानव नियम नहीं; बल्कि सौर विज्ञान है; यह ऐसी दिव्य शक्ति है जिसने तत्वों का निर्माण किया; दिव्य पिता यहोवा, सौर क्रिया क्या है?; दिव्य सौर क्रिया पुत्र, अत्यंत सूक्ष्म समय में, अति-विशाल चीजें बनाने की, संसार के प्राणियों की मानसिक क्षमता है; वे ब्रह्माण्ड के दिव्य करुब(स्वर्गदूतों) को प्रेम से आदेश देते हैं; दिव्य पिता यहोवा, दिव्य करुब(स्वर्गदूत) क्या हैं? करुब(स्वर्गदूत) पदार्थ के सबसे सूक्ष्म रूप को दर्शाते हैं; करुब(स्वर्गदूत) का अर्थ है बनना चाहना; क्योंकि प्रत्येक क्षण, वे रूपांतरणों के बारे में सोच रहे हैं; वे अनंत रूप से बेचैन रहते हैं और वे ज्यामितियों के अनंत सुधारक हैं; करुब(स्वर्गदूत) पदार्थ की सबसे सूक्ष्म चुंबकीय इकाई हैं; दिव्य करुब(स्वर्गदूत) इतने सूक्ष्म हैं कि उनके बगल में अणु एक विशाल ग्रह बन जाता है; कोई भी मानव यंत्र, पदार्थों के करुब(स्वर्गदूतों) को नहीं

देख पायेगा; करुब(स्वर्गदूत) को सौर शक्ति से देखा जा सकता है और इसे प्यार से आदेश दिया जाता है; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि ये पूरा ब्रह्माण्ड करुब(स्वर्गदूतों) से बना हुआ है; इसलिए हमारे पास समुद्रों के, पृथ्वी के, मानव के, आत्मा के, गुरुत्वाकर्षण के, अपशिष्टों के, रक्त के, और अणुओं के घनत्व के, पर्यावरण के, वेगों के और उन सभी चीजों के करुब(स्वर्गदूत) हैं जिनकी मस्तिष्क कल्पना कर सकता है; सभी ज्ञात और अज्ञात चीजें करुब(स्वर्गदूतों) से बनी हैं; भौतिक और आध्यात्मिक ब्रह्माण्ड, एकता के दिव्य करुब(स्वर्गदूतों) की वजह से अपनी संपूर्णता बनाये रखते हैं; ब्रह्माण्ड अपने रूप में इसलिए बने हुए हैं, क्योंकि अदृश्य रूप से चुम्बकीय बल एकजुट होते हैं, जिसने उनके लिए दृश्यमान या बाहर, स्पर्श योग्य ज्यामितियों का निर्माण किया; यह अभिव्यक्ति अंदर से बाहर की ओर थी; जो भी अंदर होता है उसके अनुसार वर्तमान एक-दूसरे का अनुसरण करते हैं; इसका अर्थ है कि प्रत्येक वर्तमान एक सूक्ष्म जीव था; और इसका विस्तार कभी नहीं रुकेगा; परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में दिव्य करुब(स्वर्गदूतों) का उल्लेख किया गया है; लेकिन वहां इसके विज्ञान का उल्लेख नहीं मिलता; वो करुब(स्वर्गदूत) जिससे सबकुछ बना हुआ है, मानव विज्ञान में क्रांति लाएगा; क्योंकि करुब(स्वर्गदूत) के माध्यम से, परमेश्वर के पुत्र, यह प्रदर्शित करेंगे कि पदार्थ में जीवन है, और अपने पदार्थ के कानून में यह अपने आपको अभिव्यक्त करता है; मैंने आपसे जो कुछ भी बताया है पुत्र, उसे परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में घोषित किया गया है; यह लिखा गया था: एक जीवित ब्रह्माण्ड; और व्यक्ति को आस्था और विश्वास के

माध्यम से यह समझना पड़ा था कि जीवन आत्मा के साथ-साथ पदार्थ के लिए भी है; जिन्होंने इसके विपरीत सोचा, उन्होंने अपने लिए एक सीमाओं वाला परमेश्वर अर्थात त्रुटिपूर्ण परमेश्वर बना लिया; वे अपनी जीवन की परीक्षाओं में विफल हो गए; और स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं पाएंगे; परमेश्वर से जीवन की जिन परीक्षाओं का अनुरोध किया गया था, उनमें एक अणु में भी गलत ना होना शामिल था; विचारशील आत्माओं ने, परमेश्वर से गलत ना होने का अनुरोध किया गया था और इसका वचन दिया गया था; क्योंकि आत्माओं के लिए, गलत ना होना, एक अज्ञात अनुभव था; और उन्होंने परमेश्वर से इसे आजमाने का अनुरोध किया था, और उनका यह अनुरोध पूरा किया गया.-

तो ऐसा है पुत्र; यह खगोलीय चित्रण जिसे आप बचपन से एक जीवंत दृश्य के रूप में देखते आ रहे हैं; भारत में उड़न तश्तरियों के अवतरण को प्रदर्शित करता है; यह वहां

होगा जहाँ परमेश्वर के पुत्र, एक नए शहर का निर्माण करेंगे जिसे स्वर्गीय यरूशलेम कहा जायेगा; यह अज्ञात विज्ञान का शहर होगा; यह मनुष्यों का विज्ञान नहीं होगा; इसके निर्माण में परमेश्वर के पुत्र सौर विज्ञान का प्रयोग करेंगे; यह विज्ञान मानसिक रूप से प्रेमपूर्वक पदार्थ के अणुओं को आदेश देता है; दिव्य पिता यहोवा, स्वर्गीय यरूशलेम बनाने में परमेश्वर के पुत्र को कितना समय लगेगा? वह इसे पलक झपकते ही बना सकते हैं; लेकिन, दिव्य धर्मशिक्षा का पालन करने के लिए, वह तीन दिन लेंगे; लेकिन फिर भी यह बेमिसाल होगा; क्योंकि मानव नेत्रों ने ऐसी अद्भुत संरचना पहले कभी नहीं देखी होगी; यह शहर बहुमूल्य पत्थरों से बना होगा, और इसकी स्थापत्य ज्यामिति ऐसी होगी कि यह ब्रह्मांड की सुदूर स्थिति आकाशगंगाओं की याद दिलाएगा; स्वर्गीय यरूशलेम नए साम्राज्य के प्रारंभिक बिंदु को प्रदर्शित करेगा; बाल विलक्षणताओं का साम्राज्य या विश्व; इसे भारतवर्ष में पूरा किया जायेगा, जैसा कि परमेश्वर की धर्मशिक्षा में सदियों से घोषित किया गया था: बच्चों को मेरे पास आने दें, क्योंकि स्वर्ग का साम्राज्य उनका ही है; और भारत में पवित्र आत्मा वाले बच्चे होंगे, जो सोने के विचित्र प्रभाव को नहीं जानेंगे; वे स्वार्थी और भ्रष्ट संसार के भयानक प्रभाव से अनभिज्ञ होंगे; परमेश्वर द्वारा घोषित नया साम्राज्य, तथाकथित वयस्कों से नहीं बनाया जायेगा; क्योंकि जीवन उनके लिए केवल परीक्षा मात्र था; और वे इसे अच्छी तरह से जानते थे; क्योंकि उन्हें बताया गया था; यह लिखा गया था कि प्रत्येक आत्मा जीवन में परीक्षा देगी; जिसका उन्होंने परमेश्वर से अनुरोध किया था; और उनके लिए परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने की

संभावना ज्यादा है जो कभी नहीं भूले थे कि वह जीवन की परीक्षा में थे; उनकी तुलना में जो यह भूल गए थे; किसी ने भी परमेश्वर से परीक्षा को भूल जाने का अनुरोध नहीं किया था; दिव्य पिता यहोवा, संसार में किसी ने कभी यह क्यों नहीं कहा कि जीवन बस एक परीक्षा थी? उसका कारण तथाकथित धार्मिकों पर आधारित है, जो पूंजीवाद के शासन के दौरान उभरकर सामने आये थे, और बहुत बुरे चित्रण थे; इसके अलावा पुत्र, धार्मिक प्राणियों ने पूंजीवाद के विचित्र प्रभाव के लिए किसी भी मानसिक प्रतिरोध का विरोध नहीं किया; आत्माओं की अपनी संवेदनाएं, जिन्होंने कहा था कि वे पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि थे; जहाँ तक नैतिकता की बात आती है उनमें कुछ भी असाधारण नहीं था; वे बस साधारण लोग थे; वे दुनिया में दूसरे पूंजीवाद बन गए थे; उनकी आस्था अत्यधिक भौतिकवादी थी; धार्मिक प्राणी खोज में विफल हो गए; उनके परिणाम में विश्वासों की विभिन्नता के माध्यम से, प्राणियों का विभाजन शामिल है; जीवन की परीक्षाओं में उभरकर सामने आये, तथाकथित धार्मिकों की मानसिकता में इतनी गुणवत्ता भी नहीं थी कि वे संसार को एकजुट करने में सक्षम हो सकें; उनमें सांसारिक दर्शन की कमी थी; इसीलिए वे कभी संसार को एकजुट नहीं कर सके; इतनी सदियों तक शासन करने के बावजूद; और जब तक वे यहाँ मौजूद रहेंगे; मानवता कभी एकजुट नहीं होगी; संसार के एकीकरण में उनकी विफलता व्यापक रूप से प्रकट की गयी है; मुझे पता है पुत्र कि आपको यह सत्य बचपन से पता है; और मैं आपको बताऊंगा कि यह सत्य लंबे समय से पूरी मानवता को पता होना चाहिए था; क्योंकि यह सदियों से लिखा गया था: आप उन्हें

उनके काम से जानेंगे; और संसार सदियों ने उनका काम देख रखा है; दिव्य पिता यहोवा, सबसे विचित्र बात यह है कि संसार का विभाजन शुरू करने वाले मानसिक विभाजन से पहले तक कोई भी नहीं जागता है; ऐसा ही है पुत्र; इसलिए यह लिखा गया था कि: प्रत्येक आत्मा सोती है; संसार उसपर विचार करता है जो वो सोचता है कि सही और वैध है; रोना और दांतों का पीसना, जिसे घोषित किया गया था, उन्हें एक ऐसी हताशा में जगा देगा जिसे वे कभी नहीं जीये; मुझे पता है पुत्र, क्योंकि मैं आपके मन में यह देख सकता हूँ कि आप परमेश्वर के पवित्र ग्रंथ और भारत से इसके संबंध के विषय में सोच रहे हैं; आप हमेशा से यह सोचते आ रहे हैं कि भारत ने अपने आपको उस मानसिकता से निर्देशित क्यों नहीं होने दिया, जो मनुष्यों ने अपनी बाइबिल में बनाई थी; आपकी दिव्य कृपा से, ऐसा ही है दिव्य पिता यहोवा; मैं आपको बताऊंगा पुत्र; आपको अच्छी तरह से पता है कि मेरी दिव्य धर्मशिक्षा में लिखा गया था कि: जो खोजेगा वो पायेगा; मानव की मुक्त इच्छाशक्ति को अपने लिए सर्वोत्तम खोजना चाहिए था; क्योंकि खोज की कोई सीमा नहीं थी, ना ही किसी को उस ज्ञान से संतुष्ट होना चाहिए था, जो उसे विरासत में और परंपरागत रूप से मिला था; क्योंकि वो रोमांचक था; जो परमेश्वर का है उसके सामने मनुष्य के लिए सीमित होने का जोखिम था; और उन त्रुटियों को जानने का जो दूसरे जानते थे; खोज एक व्यक्तिगत खोज होनी चाहिए थी; क्योंकि परमेश्वर के लिए व्यक्तिगत खोज सबसे सच्ची खोज होती है, और यह व्यक्तिगत खोज, ना तो किसी को नुकसान पहुंचाती है और ना ही किसी को बांटती है, और यह किसी भी

रूचि रखने वाले व्यक्ति को कभी धोखा नहीं देती है, परमेश्वर के दिव्य न्याय में, व्यक्तिगत खोज को, प्रत्येक सेकंड, एक पूर्ण पुरस्कार प्राप्त होगा; दूसरी खोज, अर्थात धार्मिक खोज, सहयोग और अनुसरण वाली खोज थी, और दूसरों से सीखी गयी थी; वे दूसरे मनुष्य गलत थे, और उन्होंने उनमें अपनी त्रुटियों को संचारित किया, जिन्होंने उनका अनुसरण किया; दूसरी तरफ, व्यक्तिगत खोज ज्यादा व्यवस्थित है, और उन त्रुटियों को समाप्त करती है, जो दूसरे लोग अनुसरण से प्राप्त करते हैं; सदियों के अनुभव ने यह दिखाया कि परमेश्वर की खोज के संबंध में, मनुष्य को मनुष्य पर भरोसा नहीं करना चाहिए; क्योंकि इससे त्रुटियां और गलतियां एक-दूसरे में संचारित होती है; इसलिए मैंने अपनी दिव्य धर्मशिक्षा में कहा था: जो खोजेगा वो पायेगा; क्योंकि केवल अनुरक्त मनुष्य ही अपने लिए सर्वश्रेष्ठ का चुनाव कर सकता है; परमेश्वर की खोज में, कोई दूसरा उसे कुछ बेहतर नहीं दे सकता; अनंत अपनी अनंत स्वतंत्र इच्छा से उनके सामने आता है जो उसे स्वयं समझने का प्रयास करते हैं; और वो उन लोगों से उतना प्रभावित नहीं होता, जो उसे समझने के लिए, दूसरों की सहायता खोजते हैं; सच्ची योग्यता, व्यक्ति में शुरू होती है; साझा योग्यता सच्ची योग्यता नहीं है; क्योंकि यह एक विभाजित योग्यता है; ध्यान दें पुत्र, जीवन की परीक्षाओं की, संपूर्ण पीढ़ियों की त्रुटि; आस्था के माध्यम से अपने परमेश्वर की समझ में संसार यह भूल गया कि परमेश्वर का दिव्य न्याय आणविक था; वे भूल गए कि इसने अनंत व्यापक और सूक्ष्म को शामिल किया था, अनंत ने ऐसी चीजों को शामिल किया था जिसे आँखें देखती हैं, और अंदरूनी

अनुभवों को भी, जिन्हें सभी लोग अपनी अनुभूतियों से समझते हैं; वास्तव में, परमेश्वर की समझ में यह सीमा अपने आप में ही मनुष्य जाति का सबसे बड़ा नाटक है; क्योंकि आत्मा को खुद ऐसी सीमा को ध्यान में रखना चाहिए था; और सभी को इसे निरस्त मानना चाहिए था; परमेश्वर के दिव्य न्याय में, जीवन की परीक्षाओं में, परमेश्वर के संबंध में, व्यक्ति को जो भी मानसिक रुकावटें होती हैं, उसका मूल्य चूका दिया गया है और इससे छूट मिल गयी है; जो भी परमेश्वर का है उसे सीमित करने वाले मनुष्य को भी सीमित पुरस्कार मिलता है; प्रत्येक सीमा से; क्योंकि मानवता को चेताया गया था कि परमेश्वर अनंत हैं, कि उनका कोई प्रारंभ और अंत नहीं है; इसलिए परमेश्वर को सही से समझने के लिए, व्यक्ति को यह मानव की मानसिकता से करने की जरुरत नहीं थी; क्योंकि मनुष्यों की सीमाएं होती हैं; मनुष्य को खुद को अनंत के सामने लाना पड़ा था; जिसकी कोई सीमा नहीं है; प्रदर्शन के साथ आस्था को परमेश्वर के सामने पुरस्कार मिला है; प्रदर्शन के बिना आस्था, बिना किसी खोज या चित्र वाली, केवल सहज आस्था है, जिसे परमेश्वर के सामने पुरस्कार नहीं मिला है; क्योंकि जीवन की परीक्षाओं में प्रयास करने वालों को ही परमेश्वर से पुरस्कार मिलने की संभावना होती है; उनकी तुलना में जिन्होंने प्रयास नहीं किया; संसार की आस्था ने, कभी यह कल्पना नहीं की थी कि विचार का एक सेकंड प्रकाश के एक अस्तित्व के बराबर होगा; संसार अपनी सूक्ष्म गतिविधियों में, परमेश्वर की अनंतता लागू करना भूल गया; और संसार को सिखाया गया था कि परमेश्वर हर जगह है; और संसार यह दिव्य सत्य जानना भी नहीं चाहता था; क्योंकि

संसार ने अपने आपको सांसारिक मंदिरों से घेरना ज्यादा पसंद किया; यदि परमेश्वर हर जगह था तो आलिशान और महंगे मंदिरों की कोई जरुरत नहीं थी; क्योंकि दिव्य आदेश के अनुसार घर अपने आप में ही एक मंदिर है; उन लोगों के लिए परमेश्वर का पुरस्कार पाने की संभावना ज्यादा है जिन्होंने उसकी सिखाई गयी बातों का सम्मान किया; उनकी तुलना में जिन्होंने इसपर ध्यान नहीं दिया; संसार उन अभूतपूर्व घटनाओं को नहीं खोना चाहेगा जो भारत में होंगी; क्योंकि उस मनुष्य को देखने का मोह सार्वलौकिक होगा, जिसका मुख सूर्य के समान चमकेगा; भारत के लिए प्रवास विश्वव्यापी होगा; और यह उस सबसे बड़ी क्रांति का परिणाम होगा, जिसे पृथ्वी पर पहले कभी नहीं जाना गया था; और यह सबसे बड़ी क्रांति मनुष्यों से बाहर नहीं आती है; बल्कि दिव्य सौर पिता से आती है, जिन्हें परीक्षाओं के संसार के लिए परमेश्वर के पुत्र के रूप में घोषित किया गया है; और भारत में, एक के बाद एक भयानक भूकंप आएंगे; क्योंकि इतने सारे देवताओं, मूर्तियों, स्मारकों, भौतिक मंदिरों की उपस्थिति परमेश्वर के पुत्र को क्रोध से भर देगी; उन्हें यह देखकर अच्छा नहीं लगेगा कि मनुष्यों ने परमेश्वर से जो वादा किया था उसे पूरा नहीं किया; इसलिए रोने और दांत पीसने का एक हिस्सा पूरा हो गया है; बाकी का हिस्सा शेष ग्रह से संबंधित है; क्योंकि परमेश्वर के दिव्य न्याय की कोई सीमा नहीं होगी; यह इतना विशाल होगा कि तथाकथित राष्ट्र उसके सामने कुछ नहीं होंगे; विभाजन का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई चीज नहीं रहेगी.- लेखक: अल्फा और ओमेगा

N° 3427

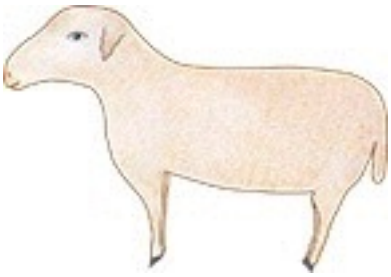

वे घटनाएं जो भारत में होंगी...

दिव्य पिता यहोवा, भारत में, समुद्र के किनारे मुझे जनसमूह दिखाई दे रहे हैं; वे इतने सारे हैं कि उन्होंने सूर्य को भी ढँक दिया है! वे क्या कर रहे हैं? वे संपूर्ण ग्रहों से आने वाले जनसमूह हैं; वे परमेश्वर के पुत्र का इंतज़ार कर रहे हैं, जो समुद्र का जल खोलने के लिए आएंगे; ये जनसमूह कई दिनों से एकत्रित हो रहा है, जिसे आज तक किसी पीढ़ी ने नहीं देखा है; तथाकथित पश्चिम लगभग खाली हो गया है; पश्चिम में केवल वे लोग शेष हैं जो घर और अस्पतालों में मरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं; और वे अकेले हैं; क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर का पुत्र होने के नाते, कोई भी अपनी आत्मा नहीं खोना चाहता है; भारत में सबसे बड़ी समस्या है, भोजन और स्थान की कमी; लोगों से भरे हुए कई नौवहन जहाज़ मानवता के इतिहास की सबसे बड़ी विलक्षण घटना का इंतज़ार कर रहे हैं, हज़ारों जहाज़ों पर बिल्कुल स्थान नहीं है; और ऐसा प्रतीत होता है जैसे छोटे बिंदुओं का जनसमूह, समुद्र की लहरों पर बह रहा है; आपकी दिव्य कृपा से मैं यह देख सकता हूँ, दिव्य पिता यहोवा; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि मानव इतिहास में इतने सारे

जहाज़ों को एक साथ कभी नहीं देखा गया है; संपूर्ण ग्रह में क्रांति आ गयी है और वे संगठन जिन्हें मनुष्यों के आधार के रूप में माना जाता था, वे बिखर रहे हैं; आप जो देख रहे हैं पुत्र, वो रोने और दांतों के पीसने का कोलाहल है, जिसे सदियों से, और मानवता के जन्म से भी पहले, पृथ्वी ग्रह के लिए घोषित कर दिया गया था; दिव्य पिता यहोवा, जो जानते हैं कि घटनाक्रम कैसे होने वाले हैं, उनके नायकों के जन्म से भी पहले से, इसकी व्याख्या कैसे की जा सकती है? मैं आपको बताऊंगा पुत्र, कि कोई भी विशेष नहीं है, क्या मेरी दिव्य धर्मशिक्षा में ऐसा नहीं लिखा गया है? आपकी दिव्य कृपा से, ऐसा ही है दिव्य पिता; खैर, यदि मेरे दिव्य वचनों से यह घोषित किया गया था कि कोई भी विशेष नहीं है तो ऐसे दृढ़ कथन का अर्थ है कि पृथ्वी पर मनुष्यों के होने से पहले, वहां पहले अन्य प्राणी मौजूद थे; मैं देख रहा हूँ पुत्र कि आप कुछ सोच रहे हैं; हाँ, मेरे दिव्य पिता यहोवा; मैं उस दिव्य दृष्टांत के बारे में सोच रहा हूँ जो आपने हमें अपनी दिव्य धर्मशिक्षा में सिखाया था: यहोवा के अंगूर के बाग में सबकुछ है; और मैं इसे उससे जोड़ रहा हूँ, जो आपकी दिव्य दयालुता मुझे इन क्षणों में सिखाती है; ऐसा ही है पुत्र; आदम और हव्वा मनुष्य जाति के माता-पिता थे और हमेशा रहेंगे; लेकिन, केवल वही नहीं हैं; क्योंकि उनसे पहले, वे माता-पिता थे जो अन्य ग्रहों के जीवन से जुड़े हुए थे; वे जीवन, जो मनुष्यों से भी पहले मौजूद थे, उन्हें सौर टेलीविज़न पर संपूर्ण संसार द्वारा देखा जायेगा; दिव्य पिता यहोवा, सौर टेलीविज़न क्या है? मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि मेरी दिव्य धर्मशिक्षा में, सौर टेलीविज़न की घोषणा भी की गयी थी; यह लिखा गया था: जीवन की पुस्तक;

जीवन की पुस्तक और सौर टेलीविज़न दोनों एक ही चीज है; क्योंकि मैं आपको बताऊंगा पुत्र, कि परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा के दिव्य शब्दों में, अनंत निरंकुशता पसंद नहीं करता है; तो यह एक ऐसी चीज है जिसे अलग-अलग मनोवृतियों में व्यक्त किया जा सकता है, और यह हमेशा एक ही चीज रहेगी; जीवन की परीक्षाओं का सबसे मुख्य भाग यह था कि मानव जाति, परमेश्वर का जो है उसे समझने के लिए, एकेश्वरवादी रूप में, केवल एक मनोवृति को स्वीकार करेगी; उत्पत्ति की गयी, जिसमें कई सदियां हैं, और जो सामने है, वो प्रदर्शित करता है कि मानवता ऐसा नहीं कर सकी; इसलिए ग्रह अपनी संपूर्णता में कभी एकीकृत नहीं हुआ; विभाजन के कारणों से और स्वार्थीपन के एक विचित्र प्रभाव के साथ विकास जारी हुआ; जो एक अज्ञात संवेदना या अनुभव के रूप में था; किसी ने भी परमेश्वर से यह नहीं मांगा था; मानवता ने अनंत से एकजुट रहने का अनुरोध किया था, जिसकी उन्हें स्वर्ग के साम्राज्य में आदत थी; अपने उत्पत्ति के स्थान में, सभी लोग जानते थे कि अलग-थलग झुंड या ग्रह, दोबारा स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे; एकता का अभाव अनंत प्रसन्नता के साथ असंगत है; ना तो साम्राज्य के अंदर से और ना ही बाहर से, विभाजन या एकता का अभाव स्वीकार किया जाता है, परमेश्वर के दिव्य कानून में, यही शैतान की नियति है, जिसने स्वर्ग के साम्राज्य के अंदर से, परमेश्वर के स्वर्गदूतों को अलग किया; अनंत काल के समय में, बुराई के कई युगों में से एक की शुरुआत करके; क्योंकि जैसा कि लिखा गया था, कोई भी अपने कार्य में विशेष नहीं है; ना ही शैतान विशेष था; दिव्य पिता यहोवा, आपकी कृपा से मैं बचपन से

ही, भविष्य के दृश्य देख सकता हूँ कि क्या होने वाला है; मुझे जो सबसे ज्यादा मोहित करता है वो है परमेश्वर के पुत्र द्वारा पानी को खोलना; क्या आप अपनी दिव्य कृपा से, मुझे समझा सकते हैं कि कोई पानी के अणुओं को कैसे आदेश दे सकता है? मुझे पता था पुत्र कि आप मुझसे यह प्रश्न जरूर करेंगे; आप बदले नहीं हैं; आप हमेशा की तरह चीजों के कारणों को लेकर चिंतित हैं; आपको संबंध के रूप में जो दिया गया था उसके बारे में चिंतित होकर, आप सही कर रहे हैं पुत्र; और इस प्रकार, आप उस दिव्य आदेश को पूरा करते हैं जिसके अनुसार: जो खोजेगा वो पायेगा; मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि प्रत्येक सौर ज्येष्ठ पुत्र के पास सौर तार होते हैं, जिन्हें सौर लाइन भी कहा जाता है; जैसा कि आपको बचपन से ही पता है पुत्र कि सबसे पहला पुत्र दिव्य पिता यहोवा के साथ दूरसंवेदी था; आपकी दिव्य कृपा से ऐसा ही था दिव्य पिता यहोवा; जब आप सात वर्ष के बालक थे, उस समय जो मैंने आपको बताया था और मानसिक दृश्यों के माध्यम से दिखाया था उसके बारे में आपको क्या याद है पुत्र? मुझे याद है दिव्य पिता यहोवा कि जब मसीह ने कहा था: मैं पिता के पास जा रहा हूँ, उन्होंने दूरसंवेदी संचार से सोचा था; उन्होंने ऊपर के लिए मनोवृति के साथ सोचा; और मुझे याद है जब वह क्रूस पर मर रहे थे, और उन्होंने कहा: पिता, पिता, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? उस समय मैंने देखा कि दूरसंवेदी संचार समाप्त हो गया था; मैंने देखा कि उनके शरीर के रोमछिद्रों से खरबों सौर लाइनें निकल रही थीं; और उनके सिरे प्रकृति के अणुओं से जुड़े हुए थे, लेकिन वे अचानक अभूतपूर्व रूप से टूट गए या अलग हो गए; और मैंने देखा कि चूँकि यह कारण

मानव नेत्रों के लिए अदृश्य था, धरती काँप उठी और सूर्य काला हो गया; और केवल इतना ही नहीं; मैंने यह भी देखा कि पूरी आकाशगंगा हिल गयी; हाँ पुत्र, ऐसा ही था; मैं देख रहा हूँ कि अपनी विलक्षण स्मृति से आप पिछले पुनर्जन्मों के दृश्यों को याद कर सकते हैं; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि यही सौर तार, जल के अणुओं में कार्य करते हैं; मैं देख रहा हूँ पुत्र कि आपको कुछ परेशान कर रहा है; ऐसा ही है, दिव्य पिता यहोवा; मैं दूसरे सौर तार के बारे में सोच रहा था दिव्य पिता; वो तार जो हम सभी के मस्तिष्क में हैं, और जिनके सिरे ब्रह्मांडीय उत्पत्ति के स्थान से जुड़े हुए हैं; हम मनुष्यों के लिए, वो उत्पत्ति का स्थान, स्वर्ग के साम्राज्य नामक अतिविशाल ब्रह्माण्ड के सूर्य अल्फा और ओमेगा हैं; ऐसा ही है पुत्र; पहले पुत्र ने स्वयं यही कहा था: मैं अल्फा और ओमेगा हूँ; वो परीक्षाओं के संसार से कहना चाहते थे कि वह मानवता के उद्गम स्थान से आये हैं; इसे आरंभ कहते हैं, और ओमेगा को अंत कहते हैं; और चूँकि ओमेगा एक बंद घेरा है, ओमेगा का अर्थ है संसार के लिए संपूर्ण न्याय; अर्थात, कोई भी दिव्य न्याय से बचकर नहीं भाग सकता है; ना ही मृत प्राणी और ना ही सूक्ष्म प्राणी; मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि अल्फा का अर्थ है कोण; और यह प्रारंभिक ज्यामिति को दर्शाता है, जिससे सौर माता ओमेगा के दिव्य गर्भ में, पृथ्वी का जन्म हुआ; अल्फा ने ओमेगा को निषेचित किया; अब मैं समझा दिव्य पिता यहोवा कि ऐसा क्यों कहा गया था कि जो ऊपर है वो नीचे के ही समान है; मैं देखता हूँ कि जैसे यह पृथ्वी पर निषेचित है, यह सौर में भी निषेचित है; ऐसा ही है पुत्र; यह वृहत में भी निषेचित है और सूक्ष्म में भी निषेचित है; समुद्रों के खुलने

की व्याख्या जारी रखते हुए; मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि यहाँ भी वही सौर तार कार्य करते हैं; क्योंकि सबकुछ एक ही नियम से आता है; और इसे अनंत विभिन्न तरीकों से प्रकट किया जाता है; मनुष्य अपने विकास में आने वाले, अपने प्रस्थान के बिंदुओं, और अपनी कहानियों को नज़रअंदाज़ करता है; और जीवन की परीक्षाओं में, अपने उद्गम के स्थान को जानना, महत्वपूर्ण था; क्योंकि परमेश्वर के पुत्र द्वारा उन लोगों को अपने उद्गम का स्थान दिखाने की संभावना ज्यादा है, जिन्होंने इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयास किया, जिसका उन्होंने स्वर्ग के साम्राज्य में अनुरोध किया था; उनकी तुलना में जो अपने उद्गम स्थान के बारे में जानने में कोई रूचि नहीं रखते थे; यह कितना न्यायसंगत है दिव्य पिता यहोवा! ऐसा ही है पुत्र; परमेश्वर का दिव्य न्याय आणविक है; और इसकी सीमाएं प्राणी अपनी गतिविधियों से बनाता है; पानी के खुलने में, सौर मस्तिष्क और अणुओं के बीच, एक दिव्य मानसिक संवाद स्थापित किया गया है; इस दिव्य संवाद को सौर क्रिया कहते हैं; और इसे ध्वन्यात्मक तरीके से किया जा सकता था, अर्थात बोलकर, या शांति से; भाव-भंगिमाओं के साथ या इसके बिना; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि पदार्थ के ऊपर शक्ति का यह नया नियम, संसार को इस हद तक मोहित करेगा कि संसार अपने कार्य को रोक देगा; शासनकारी स्थिति ढह जाएगी; और पृथ्वी के संपन्न लोगों को अपनी निर्धनता का पता चलने लगेगा; स्वयं मनुष्य के कार्य और इसके अपने रूपांतरण के माध्यम से, सौर पिता की दिव्य उपस्थिति की वजह से; संपन्न लोग अपने शरीर में रहना शुरू कर देते हैं, जीवन की परीक्षाओं के दौरान, जिसकी वजह से उनका विकास हुआ

था; दिव्य दृष्टांत का वह भाग उनपर लागू होता है जो कहता है कि: जिस छड़ से तुम नापते हो, उससे तुम्हें नापा जायेगा; और संसार का उत्पादन, परमेश्वर के पुत्र द्वारा आदेशित किया जायेगा; क्योंकि उनके सौर तारों के माध्यम से, तत्व उनका आदेश मानेंगे; मनुष्यों में कभी किसी ने ऐसी अनंत शक्ति को नहीं देखा होगा; सौर व्यक्तित्व द्वारा पानी के खुलने से, मानवता जानेगी कि नश्वर के रूप में उनका समय अब समाप्त होने वाला है; परीक्षाओं का अंत; उस अज्ञात जीवन के रूप का अंत, जो उन्होंने परमेश्वर से मांगा था; उस विचित्र संसार का अंत, जिसने बुराई और अच्छाई के लिए कार्य किया; जिसने उत्पन्न करने के साथ ही, नाश भी किया; ऐसा संसार जिसके प्राणी उस प्रकृति को समाप्त करने का इरादा रखते थे, जो उनमें थे, लेकिन वे बहुत धीमे थे; क्योंकि अपने प्रयासों में, वे परमेश्वर के दिव्य न्याय से आश्चर्यचकित थे, और इस कार्य को बहुत खराब तरीके से पूरा किया गया था; यह सबसे विचित्र कार्य था; और इसके प्राणी, परीक्षाओं के किसी अन्य ग्रह पर, इस प्रकृति और गलती से छुटकारा पाने का नया प्रयास करने के बारे में दोबारा सोचेंगे; ये प्रयास एक के बाद एक तबसे किये जा रहे हैं जब मनुष्य जाति एक सूक्ष्म प्राणी था; और सूक्ष्म प्राणी ही उनका न्याय करता है; क्योंकि मनुष्य का मस्तिष्क जिस सबसे सूक्ष्म चीज की कल्पना करता है, वो उसका न्यायाधीश बन जाता है; परमेश्वर के दिव्य न्याय में मनुष्य में उपस्थित सबसे सूक्ष्मतम चीज, बोलेगी और खुद को व्यक्त करेगी; क्योंकि यह सिखाया गया था कि कोई भी विशेष नहीं है; अर्थात, ना केवल मनुष्य बोलेगा; बल्कि वो सभी चीजें भी बोलेंगी जिनसे वो घिरा हुआ है; अनंत

अपनी सभी रचनाओं को बोलने की अनुमति देकर, अपना अनंत न्याय दर्शाता है; वह पदार्थ के साथ-साथ आत्मा को भी बोलवाता है; उसके कानून में सभी बोलते हैं; क्योंकि उनकी अनंत दयालुता में, कोई कम नहीं है; ना ही पदार्थ और ना ही आत्मा; जिस मनुष्य ने परमेश्वर को इस तरीके से नहीं अपनाया, वो उनकी दिव्य महिमा को नहीं जान पाया; वह उसके लिए छोटी सोच रखता था, जिसने सबको बनाया; जिसने इस तरीके से सोचा, वो अपनी जीवन की परीक्षाओं में असफल हो गया; और स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं पायेगा; वो तब तक अन्य रूपों में जन्म लेता रहेगा, जब तक कि वो सफल होना नहीं सीख जाता; जब तक वो परमेश्वर को तुच्छ समझने की अपनी विचित्र मानसिकता से छुटकारा नहीं पा लेता; और जब तक वो परमेश्वर को नीचा दिखाता रहेगा, उसे परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिलेगी; जब तक आत्मा अपने रचयिता के लिए, मानसिक रूप से स्वार्थी होने पर जोर देती रहती है, वो परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर पायेगी; उनके लिए परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने की संभावना ज्यादा है जो उनके लिए मानसिक रूप से स्वार्थी नहीं थे; पानी के खुलने के बारे में बताना जारी रखता हूँ पुत्र, मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि यह दिव्य सौर प्रक्रिया, पानी के करुब(स्वर्गदूतों) से प्यार से बात करके किया जाता है; मैं उन्हें अब देख सकता हूँ पिता यहोवा! वहां सुंदर प्राणियों का बहुत सारा झुंड है! ऐसा ही है पुत्र; इनकी संख्या इतनी ज्यादा है कि मनुष्यों की संख्या इसमें गायब हो जाती है; मुझे पता है पुत्र कि जिन दिव्य करुब(स्वर्गदूतों) को आप देख रहे हैं उनके संबंध में, आपके मन में बहुत सारे प्रश्न

उमड़ रहे हैं; ऐसा ही है दिव्य पिता यहोवा; मैं आपको पहले ही बता देता हूँ कि मेरे दिव्य उत्तरों की कोई सीमा नहीं है; इसलिए, मैं आपको केवल वहां तक बताऊंगा जहाँ तक, मनुष्य का मस्तिष्क इसे समझ सकता है; शेष अनंत जिन्हें वे नहीं समझते हैं, उन्हें दूसरे ग्रहों के अन्य मस्तिष्कों द्वारा समझा जाता है; यह मत भूलना पुत्र कि कोई भी विशेष नहीं है; मैं नहीं भुला हूँ दिव्य पिता यहोवा; पानी और बाकी सभी चीजों के करुब(स्वर्गदूत),जिससे पदार्थ बना है, और जिसे मनुष्य ने जानने का अनुरोध किया था, उन सभी में करुब(स्वर्गदूत) की मुक्त इच्छा होती है; उसी प्रकार जैसे प्राणी में मनुष्य की मुक्त इच्छा होती है; करुब(स्वर्गदूत) की संवेदनाएं, मनुष्य की आँखों के लिए अदृश्य आयामों के अंदर, महसूस होती हैं और रहती हैं; उनके पास विकास के अपने खुद के वर्तमान हैं, जिस प्रकार मनुष्य के हैं; इसके बाद, मनुष्य अनंत वर्तमानों से घिरा है, जिसमें अन्य प्राणी रहते हैं; चूँकि संसार अस्तित्व में है, इसलिए यह हमेशा से ऐसा ही रहा है; और सबसे प्रसिद्ध आयामों में से एक आयाम है, आत्माओं का आयाम; मानवता में इस अदृश्य आयाम का सबसे ज्यादा उल्लेख किया गया है, क्योंकि इसका स्वयं मनुष्य से सीधा संबंध है; दिव्य पिता यहोवा, क्या आत्माएं करुब(स्वर्गदूतों) को देख सकती हैं और करुब(स्वर्गदूत) आत्माओं को देख सकते हैं? हाँ, और यह दिव्य उत्तर नहीं है; मैं तुम्हें बताऊंगा पुत्र: सबकुछ आयाम के विस्तार पर निर्भर करता है; क्योंकि सूक्ष्म का भी अपना एक स्थान है; इससे भी कहीं ज्यादा; स्थान के अतिरिक्त, इसे समय और दर्शन मिला है; इसके बाद आत्माएं अपनी भावना की आवृत्ति के अनुसार

करुब(स्वर्गदूतों) को देखती हैं; दिव्य करुब(स्वर्गदूतों) के साथ भी यही होता है; पदार्थ के उद्गम की बात करते समय, मैं आपको इसके बारे में और अधिक गहराई से बताऊंगा पुत्र; यह 3,000 दूरसंवेदी सूचीपत्रों का कार्य होगा; मैं सीमाओं के साथ कार्य करता हूँ, क्योंकि इस वर्तमान विकास में मनुष्य की सीमाएं हैं; इसमें नया यह है कि अपनी सीमाओं के अंदर, वह नियम और नयी चीजें जानता है; दिव्य पिता यहोवा, क्या सीमा को विस्तार मिला है? यह कितना रोचक प्रश्न है पुत्र: सीमा को अपने खुद के संकेत का विस्तार मिला है; मेरा अर्थ है कि जहाँ आत्मा ज्ञान में उन्नति नहीं करना चाहती, वहां सीमा अज्ञानता में विस्तारित होती है; और जीवन की परीक्षा और पिछड़ेपन के रूप में अनुरोधित समय के बीच असंतुलन बड़ा होता है; सीमा के विस्तार की अपनी गुणवत्ता है; प्रकाश के अनुरूप गुणवत्ता, सभी में प्रदर्शन द्वारा प्रदान की जाती है; सीमा के विस्तार के संबंध में पतन, अंधकार द्वारा प्रदान किया जाता है; सौर टेलीविज़न पर, संसार बुराई और अच्छाई के चुंबकत्व का रंग देखेगा; क्योंकि यह लिखा गया था कि हर आँख देखेगी; और वे अपनी संवेदनाओं में मौजूद भौतिक विशेषताएं देखेंगे; वे अपने अभिन्न को पदार्थ में बदलते हुए देखेंगे; वे उस सूक्ष्म अनंतता को देखेंगे जो उनके शरीर में मौजूद थी; समुद्रों के खुलने के नियम में, सौर चुंबकत्व पानी के करुब(स्वर्गदूतों) से बात करता है; संसार भी इस बातचीत को देखेगा; और जब वे समुद्रों में मौजूद प्राणियों के जनसमूह को देखेंगे, तब संसार जानेगा कि क्यों उन्हें चेतावनी दी गयी थी कि कोई विशेष नहीं है; प्रत्येक मनुष्य को एक ऐसी शर्म घेर लेगी, जिसे धरती पर कभी नहीं देखा

गया था; यह शर्म उन लोगों में ज्यादा विकट होगी, जिन्होंने किसी में भी विश्वास नहीं किया; और पृथ्वी के सम्पूर्ण इतिहास में, तथाकथित भौतिकवाद, आत्महत्याओं के सभी अभिलेख तोड़ देगा; तब जाकर संसार की आँखों से अंधकार की पट्टी हटेगी, जो कई सदियों से लगी थी; वहां, रहस्योद्घाटन के उस क्षण में, वे यह समझेंगे कि जिन्होंने संसार पर शासन किया, उनकी नैतिकता कमजोर थी; वे सभी आसानी से भयभीत हो जाते थे और आशंकाओं से घिरे हुए थे; वे सभी जीवंत तुच्छता थे; उन सभी ने अपने आपका अध्ययन ना करके; अपने व्यक्तित्व को ना जानकर, नुकसान पहुँचाया; परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा में, स्वर्ण के लोभ से ग्रस्त मनुष्यों से होने वाले नुकसान के बारे में चेतावनी दी गयी थी; क्योंकि यह लिखा गया था कि; खुद को जानो; जिसका अर्थ था कि: उन सभी आंतरिक भावनाओं, संवेदनाओं को दूर करो, जिससे कोई हानि उत्पन्न हो सकती है, जिससे दूसरों को नुकसान पहुँच सकता है; भारत में भी, इसके प्राणियों ने अपने व्यक्तित्वों के छवियों, मूर्तियों, मंदिरों का सम्मान करने के विचित्र लोभ को दूर ना करके, उन्होंने खुद अपने साथी मनुष्यों के परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश को रोकने में सहायता की है; क्योंकि यदि लाखों ने यह किया तो लाखों ने उनका अनुसरण भी किया; विचारशील प्राणी में हमेशा अपने बुजुर्गों का अनुसरण करने की प्रवृत्ति होती है; और यदि उनके बुजुर्गों ने परमेश्वर की खोज में अपने उदाहरणों की गुणवत्ता में सुधार नहीं किया तो उन्होंने शेष मनुष्यों में भी त्रासदी संचारित की; क्योंकि उन लोगों के परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने की संभावना ज्यादा है जिन्होंने दूसरों में वो विरासत संचारित

की जो परमेश्वर के साम्राज्य में ले जाती है; उनकी तुलना में जो दूसरों को परमेश्वर के साम्राज्य में जाने से रोकते हैं; मनुष्यों की विचित्र नैतिकताएं परमेश्वर की नैतिकताओं पर आधारित नहीं थी; ऐसा ना करके, मनुष्यों ने स्वयं अपने फल को छोटा कर दिया; जो परमेश्वर का है, केवल वही असीम है; संसार की विचित्र नैतिकता, जिसमें उन्होंने तस्वीरों की उपासना का अधिकार शामिल किया, उसने खुद की उपासना की; वे एकमात्र परमेश्वर को स्वीकार नहीं करना चाहते थे; और एकमात्र परमेश्वर को केवल मिसाल और कार्य से समझा जा सकता है; और जब तक प्राणी अपनी मुक्त इच्छाओं, सूक्ष्म रूप की आराधना या उनके सम्मान पर जोर देते रहेंगे, ऐसे प्राणी परमेश्वर को नहीं देख पाएंगे; छवियों की आराधना करने की अस्वीकृति, व्यक्ति के मन से बाहर आनी चाहिए; यदि यह निर्धारित अस्तित्व में नहीं होता, तो यह दूसरे में होता है; मानव शिला के मामले में, छवियों की आराधना, हज़ारों अस्तित्व पहले से होती आ रही है; और वर्तमान में यह दोबारा हुई; इसलिए वे दोबारा स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगे; भारतवर्ष के निवासी अन्य संसारों, अन्य अस्तित्वों में अपने विचित्र रिवाज़ों को जारी रखेंगे; दिव्य पिता यहोवा, जो सबकुछ जानते हैं, परमेश्वर के पुत्र की दिव्य उपस्थिति का उनपर क्या प्रभाव पड़ेगा? उनपर पड़ने वाला प्रभाव, उनके जीवन की सबसे बड़ी घटना होगी; क्योंकि परमेश्वर के पुत्र पर स्वयं भारत, और ग्रह का अस्तित्व निर्भर करेगा; जब करोड़ों लोग अपनी आँखों से उस मनुष्य का चेहरा देखेंगे, जिसका चेहरा सूर्य के समान चमकता है तो सबसे बड़ी क्रांति की शुरुआत होगी; उस श्रेष्ठ क्षण में, पृथ्वी की सभी तथाकथित

सरकारों का नाश हो जायेगा; कोई भी मनुष्यों के कानून का पालन नहीं करेगा; सभी लोग केवल उसके द्वारा शासित होना चाहेंगे, जो कभी नहीं मरता है; पहले और अंतिम के द्वारा; यह नश्वर प्राणियों के कार्य का अंत होगा; यह सबसे बड़े जानवर का पतन होगा; यह सबसे विचित्र संसारों में से एक का पतन होगा; यह संसार इतना विचित्र था कि वे दिव्य सौर न्यायाधीश के आगमन को भी भूल गए थे, जबकि संसार ने स्वयं इसका अनुरोध किया था; दिव्य पिता यहोवा, जानवर का क्या अर्थ है? जानवर, मनुष्यों के स्वार्थीपन को दर्शाता है, जिसकी वजह से सम्पूर्ण मनुष्य जाति ने सदियों तक कष्ट सहा; जानवर के ज्यादातर प्रतिनिधि, वे मनुष्य थे जो स्वर्ण से प्रभावित हो गए थे; जानवर क्रूर, चतुर और चालाक था; जानवर मानता था कि यह सबको समझता है, और यह किसी को नहीं समझता था; क्योंकि जानवर की कोई ग्रह-संबंधी समझ नहीं थी; जानवर का अत्याचार, ग्रह के एकीकरण के संबंध में इसकी अपनी अज्ञानता थी; संसार के विभाजन को सबसे सामान्य और स्वाभाविक चीज के रूप में मानना जानवर का शैतानी स्वप्न था; यह जानवर की त्रासदी थी; और जानवर कयामत आने से पहले तक नहीं उठा; संपूर्ण पीढ़ियों की उम्मीदों को बढ़ाते हुए, जानवर ने जीवन की परीक्षाओं का नेतृत्व किया, और इन पीढ़ियों को स्वर्ग के साम्राज्य में कोई प्रवेश नहीं मिला; जानवर के भ्रम में, परमेश्वर को भूल जाने की, एक शैतानी मानसिकता शामिल थी; परमेश्वर की प्रतीक्षा करने वाले प्राणी विस्मरण या विकृति में फंस गए; जानवर के कारण वे अनंतता को भूल गए; और उन्होंने जीवन के सभी क्षणों को अल्पकालिक को समर्पित कर दिया; और

अल्पकालिक स्वर्ग के साम्राज्य से नहीं है; मानव विचारधारा एक विचित्र स्वप्न में फंस गयी, जिसकी वजह से वे अपने खुद के अधिकारों को भूल गए; विकृत संरूपता, आत्मा की सामान्य मानसिकता थी; व्यक्ति आरामदायक संवेदनाओं के लिए ज्यादा जीया और उन संवेदनाओं को भूल गया जो सुधार की दिशा में ले जा सकती थी; किसी ने भी एक परमेश्वर के सिद्धांत को नहीं माना; और यदि किसी ने माना भी तो उसने यह विचित्र अनैतिकता के साथ किया गया, और जो भी किया गया उसका कोई फल नहीं मिला; मानव का ज्ञान एक परमेश्वर को नहीं मानना चाहता था; मनुष्यों ने अपनी रीतियों और सोच में उसे शामिल नहीं किया; इसलिए आश्चर्यजनक रूप से सभी लोग एक से अधिक मान्यताओं में फंस गए; लम्बे समय से ग्रहों की जिस एकजुटता की प्रतीक्षा की गयी, वो कभी प्राप्त नहीं हुआ; शैतानी धीमेपन ने अपेक्षित प्रसन्नता पर विजय प्राप्त कर ली; जानवर परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश नहीं कर पाया, और उसने दूसरों को भी प्रवेश नहीं करने दिया; जानवर का लोभ, अन्य अनगिनत ग्रहों में दोहराता रहेगा; जानवर द्वारा भविष्य में अन्य तमाशे किये जायेंगे; क्योंकि जानवर दोबारा जन्म लेगा; जानवर परमेश्वर से अवसरों का अनुरोध करेगा; जानवर जीवन के अन्य रूपों में प्रयास करेगा; जैसे कि यह तबसे करता आ रहा है जब वो एक सूक्ष्म प्राणी था; जानवर ने पृथ्वी पर शैतान का प्रतिनिधित्व किया; क्योंकि शैतान ने, विचित्र जीवन प्रणाली का रूप ले लिया था, जिसका आधार असमानता पर टिका था; शैतान, जानवर, अपने आपको मनुष्य जाति के रीति-रिवाज़ों में लाने में सफल हो गया; और मनुष्य जाति सोती रही और उन्होंने शैतान को

शामिल होने दिया; जीवन की परीक्षाओं में जानवर ने खुद को अपनी स्वाभाविक बुद्धि से निर्देशित किया; क्योंकि जानवर को परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा के पाठ के बारे में कुछ नहीं पता था; और जानवर के अनुयायी, उसके खेल में फंस गए; जिसने भी मस्तिष्क से, जानवर को जाना, वो परमेश्वर की दिव्य धर्मशिक्षा को नहीं जान पाया; पिता से पुत्र में, और पीढ़ी दर पीढ़ी यह भूलने की प्रवृत्ति आनुवंशिक रूप से मिलती रही; जानवर द्वारा सोची गयी जीवन प्रणाली ने मनुष्य की प्रसन्नता छीन ली; क्योंकि जानवर पर विजय पाने के लिए मानवता को खुद को जानने की जरूरत थी; और उन्होंने ऐसा नहीं किया; उन्हें अपने अंदर, जानवर से अधिक, श्रेष्ठ दर्शन का निर्माण करना था; क्योंकि यह सिखाया गया था कि प्रत्येक श्रेष्ठता कठोर परिश्रम से प्राप्त होती है; मानवता की आराम की भावना ने, इस अंधेपन को निंदनीय होने की हद तक आगे बढ़ाया; जीवन की परीक्षाओं में, मानवता द्वारा जीये गए कुल सेकंड, अपनी समाप्ति पर आ गए हैं; इसके समय ने अब दिन गिन लिए हैं; धरती पर नश्वरों का अंत आ रहा है और अनश्वरों का समय प्रारम्भ हो रहा है; जानवर को अंत तक कुछ पता नहीं चलेगा; क्योंकि परमेश्वर के पुत्र द्वारा उत्पन्न किया गया भूकंप ही जानवर को उसकी विचित्र विमुखता से बाहर निकाल पायेगा; और जब जानवर जागता है तो यह उसका अंत होगा; जानवर यह दिखाने का प्रयास करेगा कि यह ऐसा है; क्योंकि जानवर अपने अंतिम अभिमान एवं अपने दुःसाहस में, परमेश्वर के पुत्र का सामना करने के लिए, परमाणु हथियारों को लाएगा; जानवर के इस व्यर्थ के अभिमान के कारण, पृथ्वी पर इतना भयानक भूकंप आएगा कि यह मनुष्यों

का एक-आठवां भाग निगल लेगा; परमेश्वर के पुत्र अपने दिव्य क्रोध में, अंतिम दिनों के दौरान, भयानक भूकंप लाते हैं; जिसे पहले कभी मनुष्यों ने नहीं देखा होगा; जानवर अपने जीवन के अंतिम क्षण में आतंक में रहता है; जिस दिव्य शक्ति पर उसने कभी भरोसा नहीं किया, उसी के कारण उसका अंत होता है; यह जानवर का अमर आश्चर्य है; क्योंकि दूसरे ग्रहों में, जीवन की दूसरी परीक्षाओं में, जानवर दिव्य परमेश्वर के अन्य आश्चर्यों, अन्य आतंकों, अन्य भयों का सामना कर चुका है; क्योंकि जानवर का स्वभाव आशंकाओं से भरा हुआ है; इसलिए इसका भावनात्मक मोक्ष आत्महत्या करना है; यह उन लोगों का संसाधन है, जिन्हें अनंतता को जानने का अवसर नहीं मिला; ऐसे लोगों का संसाधन है, जो स्वर्ग के साम्राज्य के लिए विचित्र हैं; जानवर अपने शैतानी शासन के अंतिम क्षण में, लाभ के बारे में सोचेगा; यह अंतिम क्षण तक दूसरों का उत्पीड़न करेगा; और मैं आपको बताऊंगा पुत्र कि जानवर के जाने के साथ ही, जीवन की परीक्षाओं में, ग्रह पर एक अनोखी प्रसन्नता जन्म लेगी, जो धरती के लिए बिल्कुल अज्ञात अनुभव है; यह हृदय से आज्ञाकारी लोगों की प्रसन्नता है; यह उन लोगों की प्रसन्नता है जिन्होंने हमेशा अस्थायी चीजों को अस्वीकार किया; यह उन लोगों की प्रसन्नता है जिन्होंने क्षणभंगुर चीजों पर अपनी उम्मीदें कायम नहीं की; यह उनकी प्रसन्नता है जिन्होंने कभी कुछ नहीं छिपाया; यहाँ तक कि अपनी गलतियों को भी नहीं; यह उनकी प्रसन्नता है; जिन्होंने सबकुछ बताया; यह उनकी प्रसन्नता है जिन्होंने उस दिव्य आदेश का पालन किया जिसके अनुसार: जिसके पास मुंह है वो बोलता है; यह उनकी प्रसन्नता है, जो उस

मानसिकता के साथ जीना जानते हैं, जिसके साथ एक बच्चा जीता है; यह उनकी प्रसन्नता है जिसने हमेशा इसकी प्रतीक्षा की और जो हताश नहीं हुआ; क्योंकि उन्होंने उस दिव्य दृष्टांत का पालन किया जो कहता है कि: जो खोजेगा वो पायेगा; उन्होंने बच्चों के समान धैर्य के साथ खोजा, प्रतीक्षा की और पाया; इस प्रसन्नता को नए साम्राज्य की प्रसन्नता कहा जायेगा; जीवन की परीक्षाओं के तथाकथित वयस्क, इसमें हिस्सा लेंगे; क्योंकि इस नए साम्राज्य में हिस्सा लेने में समर्थ होने के लिए, मनुष्य में बच्चों के समान निर्मलता होनी चाहिए; जीवन की परीक्षाओं के तथाकथित वयस्कों, नश्वरों को, इस नए साम्राज्य में भाग लेने का उत्कृष्ट अवसर मिला; जब तक कि अपनी जीवन की परीक्षाओं में, प्राणी के रूप में अपने सम्पूर्ण विकास के दौरान, उन्हें इसका ज्ञान था कि बच्चे के समान निर्मलता कैसे रखी जाए; यही जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य था; जानवर के साथ, व्यक्ति कभी बच्चे के समान निर्मलता नहीं रख पाया; क्योंकि जानवर ने अपनी व्यवसायिक मानसिकता के साथ, सभी चीजों को कलंकित किया; जानवर जीवन की ओर ले जाने वाले मार्ग को भूल गया; क्योंकि ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी हो रहा था उसके लिए जानवर की आध्यात्मिक रूचि समाप्त हो गयी थी; जानवर ने खुद को अनंत से दूर कर लिया; जानवर ने अपनी इच्छा से खुद को अनंत परमेश्वर से अलग कर दिया; किसी ने जानवर को जानवर बनने के लिए मजबूर नहीं किया था; यह चीजों का विचित्र मोह था, जिसने जानवर को जानवर बना दिया; जानवर ग्रह को राष्ट्रों में बाँटकर प्रसन्न था; क्योंकि इस प्रकार के सह-अस्तित्व से, जानवर ने शोषण किया; ग्रह की एकता, जानवर

के लिए सुविधाजनक नहीं थी; क्योंकि एकजुट ग्रह, एक ऐसी चीज को दर्शाता था, जिसे जानवर बौद्धिक रूप से नहीं समझ पाया; और उसका अभिमान अशांत हो गया; दरअसल, जानवर को जिस उत्तमता की तलाश थी, वो बहुत विचित्र था; जानवर की शक्ति क्रोध पर निर्भर थी, ना कि ब्रह्माण्ड के अनंत नियम पर; स्वर्ण के विचित्र लोभ से ग्रस्त जानवर ने परमेश्वर की दिव्य सहभागिता के बिना योजना बनाई; जानवर खुद को सर्वशक्तिमान समझता था; उसने अपने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसके विचित्र शासन में रुकावट आ सकती है; उसने यह भी नहीं सोचा था कि कोई दूसरी शक्ति उसे समाप्त कर सकती है; अपनी महानता के सपनों में जानवर यह भी भूल गया कि वह कहाँ से आया था; उसके अपने उद्गम की अज्ञानता से उसका पतन आया; जिसे वह जानबूझकर समझना नहीं चाहता था, वहीं से कोई ऐसा प्राणी आएगा जो उसे सम्पूर्ण मानवता से अदृश्य कर देगा; जानवर ने हमेशा परमेश्वर को समझने में अनैतिकता को आने दिया; क्योंकि ऐसी अनैतिकता की वजह से जानवर ने अद्भुत लाभ उत्पन्न किये; और जब इस अनैतिकता ने जानवर के लिए लाभ उत्पन्न किये तो अनंत को समझने में इस विचित्र अनैतिकता को जानवर द्वारा स्वतंत्रता का नाम दिया गया; यदि यह विचित्र तथ्य जानवर के लिए लाभदायक नहीं होता तो उसने इसे स्वतंत्रता का नाम नहीं दिया होता; क्योंकि वो हर चीज जिससे जानवर को लाभ होता था, उसके लिए अच्छी थी; और अपनी रीतियों के माध्यम से, पृथ्वी के प्राणियों ने जानवर की सेवा की; और जानवर ने परीक्षाओं के समय के अंत तक उनका प्रयोग किया; मानव नियमों के अंदर, जानवर इन

क्षणों में अत्यंत पीड़ा सह रहा है; क्योंकि जानवर गरीब हो रहा है; लेकिन जानवर अपने अभिमान और अहंकार में अपनी गरीबी के बारे में कुछ नहीं कहता, जो इसकी सबसे बड़ी विशेषताएं हैं; संसार को इसके बारे में बताते समय, जानवर अपनी लोभी अर्थव्यवस्थता के तकनीकी शब्दों से इसकी व्याख्या छिपा देता है; अपनी गरीबी के लिए वह दूसरों को दोष देने तक गिर गया है; लोभी, अवमानी और चालाक प्राणियों के उत्पाद, जानवर ने हमेशा दूसरों से कहीं ज्यादा अपने बारे में सोचा; उसने अपने स्वर्ण से इन लोगों की रूढ़ियों को चालाकी से नियंत्रित किया; जानवर को लगा कि चीजें हमेशा समान रहेंगी; लेकिन जो घटनाक्रम संसार की ओर बढ़ रहे हैं, उससे जानवर भयभीत हो जायेगा; क्योंकि, अब एकमात्र परमेश्वर यहोवा, आध्यात्मिकता को भौतिकता पर विजयी कराएंगे; क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है; परमेश्वर के ज्ञान का मेमना, जानवर हो हराएगा; परमेश्वर का दिव्य जीवित वचन, रहस्योद्घाटन सिद्धांत बनाएगा; जानवर यह देखकर आतंकित हो जायेगा कि उसपर अब कोई ध्यान नहीं दे रहा; उसके सैन्य बैरक खाली पड़े रहेंगे, जहाँ उसने परमेश्वर की संतानों को दूसरों को मारना सिखाया था; एक भी मानव आत्मा यहाँ नहीं रहेगी; यहाँ केवल धूल और अंधकार का निवास होगा; जानवर के भयानक युद्धपोत का त्याग कर दिया जायेगा और उनमें जंग लग जायेगा; जानवर को पुराने तरीके से असामी और स्वैच्छिक कर्मचारी नहीं मिलेंगे; तब जानवर यह स्वीकार करेगा कि उसे नियम का उल्लंघन करने की आदत हो गयी थी; और जब जानवर को अपनी इस गलती का एहसास होगा तब उसके संसार के

इतिहास से मिटने का समय आ जायेगा; जानवर अपने नाश के अंतिम चरण में जी रहा है; इस चरण में जानवर अपने ही नियमों का उल्लंघन कर रहा है; अतीत में जानवर को मारने से भय होता था; अब मारना, जानवर के लिए सबसे स्वाभाविक चीज हो गयी है; जानवर की भावनात्मक अस्थिरता, जो शुरू से अंत तक उसके साथ थी, उसके कोलाहल में नष्ट होने का कारण बनती है; दिव्य अंतिम न्याय के संबंध में, भारत में कई घटनाएं होंगी, जिन्हें भविष्य में हम अनगिनत दूरसंवेदी पत्रों में लिखेंगे; ऐसा ही होगा दिव्य पिता यहोवा; आपकी दिव्य इच्छा पूरी हो; मैं आपको पहले ही बताऊंगा पुत्र, कि भारत और चीन में, पृथ्वी पर संतानों द्वारा पहली सरकार की स्थापना होगी; वे ग्रह को एकजुट करेंगे; वे वो करेंगे, जो सदियों से जीवन की परीक्षाओं के तथाकथित वयस्क नहीं सके; दिव्य पिता यहोवा, संतानों को ही यह क्यों करना होगा? कितना विलक्षण प्रश्न है पुत्र; यह संताने होंगी, क्योंकि उन्हें स्वर्ग का लोभ नहीं होता; और क्योंकि बच्चे हर चीज में भरोसा करते हैं; और सबमें भरोसा करने का अर्थ है कि वे परमेश्वर की अनंतता में भरोसा करते हैं; बच्चे निष्कपटता के साथ, केवल एक मालिक की सेवा करते हैं; जबकि तथाकथित वयस्कों ने अपने भावनात्मक लोभ के साथ, अपने जीवन की परीक्षाओं में, कई मालिकों की सेवा की; और जो कई मालिकों की सेवा करते हैं, वे परमेश्वर में ज्यादा विश्वसनीयता नहीं दिखाते हैं; उन लोगों के लिए अनंत में विश्वसनीयता प्रेरित करने की सम्भावना ज्यादा है जो केवल एक मालिक में खुद को परिभाषित करना जानते थे; पहली संतानों ने अपनी गलती के साथ, प्राणियों के बीच विभाजन शुरू किया;

दूसरी संतानों ने एकीकरण में योगदान दिया; भारत और चीन में, संसार की सभी संताने केंद्रित होंगी; और वे अनंत शरीर में खुद को इतना बढ़ा लेंगे कि कोई मानव मस्तिष्क उनकी गणना करने में सक्षम नहीं होगा; ये बुद्धिमान संतान, अपने बुजुर्गों से बात करते हुए पैदा होंगे; और अपने शैशविक सिद्धांत, स्वर्ग के साम्राज्य के विज्ञान लाएंगे; वे अपने साथ वे भावनाएं नहीं लाएंगे जो नश्वर लाये थे; उनकी मृत्यु नहीं होगी; वे अपने शरीरों का सड़ना नहीं जानेंगे; जीवन की परीक्षा में नश्वर प्राणियों द्वारा अनुभव की गयी सड़न, उन्होंने खुद परमेश्वर से मांगी थी, क्योंकि वे इसे नहीं जानते थे; वे सभी संवेदनाएं जो प्रत्येक मनुष्य महसूस करता था और जो उसमें मौजूद थीं, उसे परमेश्वर से मांगा गया था, क्योंकि वे अज्ञात थीं; इसलिए यह लिखा गया था: जीवन की परीक्षाएं; परमेश्वर प्रत्येक आत्मा की परीक्षा लेते हैं; आप सभी की हर एक सेकंड परीक्षा ली जाती है; और कोई इसपर ध्यान नहीं देता; अनंत परमेश्वर की अनंत उत्कृष्टता ने, परीक्षाओं से गुजरते समय, किसी को भी अपनी मुक्त इच्छा से इससे प्रभावित नहीं होने दिया; खुद बिना दिखे, दूसरों को देखने में, परमेश्वर अपनी अनंत शक्ति प्रदर्शित करते हैं; और वर्तमान जीवन में परमेश्वर को ना देखना, परमेश्वर से मांगा गया था; मानव आत्माएं परीक्षाओं के ग्रह, पृथ्वी पर, परमेश्वर को ना देखने के अनुभव को नहीं जानती थीं; और परमेश्वर को ना देखने का अनुरोध, परीक्षा के रूप में पूरा किया गया था; पृथ्वी पर सदियों का जीवन, परमेश्वर के लिए केवल एक क्षण या आह के बराबर है; यह इसलिए क्योंकि अनंत अपने बनाये गए अनंत समयों में से अपना समय खुद चुनते हैं; परमेश्वर समय को वृहत या

सूक्ष्म में बदलते हैं; वह उन्हें संकुचित और विस्तारित करते हैं; पृथ्वी के मामले में, उन्होंने स्वर्गीय समय चुना था; जिसमें स्वर्गीय समय का एक सेकंड, सांसारिक सदी के बराबर था; परमेश्वर एक विशाल संसार में रहते हैं, जिसे परमेश्वर का साम्राज्य भी कहा जाता है; एक ऐसा स्थान जहाँ हर अकल्पनीय चीज मौजूद है; एक ऐसा स्थान जहाँ चीजों और प्राणियों की कोई सीमा नहीं है; एक ऐसा स्थान जहाँ पदार्थ ब्रह्मांडीय दूरसंवेदन में बोलते हैं; एक ऐसा स्थान जहाँ हर मौजूद चीज, उससे आयी है जो वहां था, जो वहां है, और जो वहां होगा; एक ऐसा स्थान जिसे दिव्य अंतिम न्याय की घटनाओं में, प्रत्येक मानव नेत्र देखेगा, क्योंकि मनुष्य जाति ने इसे देखने का अनुरोध किया था; और अपनी उत्पत्ति के स्थान को देखकर, परीक्षाओं का संसार, आंसुओं की धारा में बह जायेगा; और लाखों रुदन करती हुई आत्माओं से, एक नया दर्शन जन्म लेगा, जो सबकुछ बदल देगा; लाखों रुदन करती हुई आत्माएं उन्हें दोष देंगी जिन्होंने सदियों से उन्हें अभिमानपूर्ण और चालाक मशीनों में बदलने का व्यर्थ प्रयास किया; और जिन्होंने उन्हें एक ऐसे विचित्र मार्ग पर चलाया जो परमेश्वर के साम्राज्य की ओर नहीं जाता था; और जब परमेश्वर के पुत्र उन्हें बताएँगे कि दोबारा प्रवेश पाने में सक्षम होने के लिए उन्हें एक दिव्य न्याय से गुजरना होगा तब लाखों रुदन करती हुई आत्माएं समीक्षात्मक हो जाएँगी, क्योंकि जीवन की परीक्षाओं में मौजूद शरीर या आत्मा का एक भी अणु इस न्याय से बचकर नहीं भाग पायेगा; परमेश्वर के साम्राज्य में जाने के लिए, मनुष्य को दोबारा तस्वीरों या प्राणियों के माध्यम से परमेश्वर की उपासना करने की पुरानी गलती को दोहराने की जरुरत नहीं थी,

जिसे स्वयं अनंत द्वारा बनाया गया था; परमेश्वर के दिव्य न्याय आणविक हैं और उनके दिव्य कानून वहां तक प्रवेश करते हैं, जहाँ कोई अन्य विज्ञान प्रवेश नहीं कर सकता है; जो परमेश्वर का है वह उन संवेदनाओं को भी शामिल करता है जो प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में अनुभव करता है, और जिसे कोई बता नहीं सकता है; यह उस अदृश्य को शामिल करता है, जो गुणों के माध्यम से रहता है।

अल्फा और ओमेगा

N° 3428

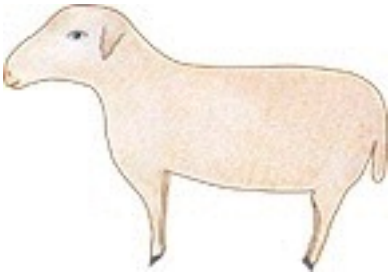

1378। पूंजीवाद नामक विचित्र जीवन प्रणाली के समाप्त होने के बाद, नए संसार में, दुनिया आत्माओं का पुनर्जन्म देखेगी; यह दिव्य घटना चीन और भारत में होगी; परमेश्वर के पुत्र एशियाई पूर्व में निवास करेंगे; और संसार दुनिया का सबसे बड़ा प्रवास देखेगा, जिसे मानव नेत्र ने पहले कभी नहीं देखा है; पश्चिम पूर्व की ओर प्रवास करेगा; अपने शरीर के पुनर्जन्म की खोज में; अपनी भौतिक अनंतता की खोज में; इस ग्रह के गोलार्द्ध संबंधी परिवार में, पहले दिव्य संतान की स्वतंत्र इच्छा की दिव्य प्राथमिकता में पश्चिम सबसे अंत में है; यह उनके कारण है जिन्होंने परीक्षाओं के इस संसार को एक विचित्र और अज्ञात जीवन प्रणाली देने की अजीब स्वतंत्रता ले ली, जिसमें निर्माता के नियमों को शामिल नहीं किया गया।

मसीह ने कहा:

जिस प्रकार पूर्व से आने वाली बिजली, पश्चिम में भी दिखाई देती है, उसी प्रकार मसीह का आना भी दिखाई देगा। क्योंकि जहाँ लाश होती है, गिद्ध वहीं इकट्ठा होते हैं।

मत्ती 24, 27

दिव्य अनंत पिता की सांसारिक संसार की घोषणा:

1073.- संसार के लिए बाइबिल में दी गयी घटनाएं, पूर्व में होंगी, इस गोलार्द्ध में ज्यादा उच्च नैतिक मूल्य हैं; तथाकथित पश्चिमी गोलार्द्ध अनैतिक है; क्योंकि स्वर्ण के लिए उनके विचित्र लगाव ने उनमें विचित्र नैतिकताएं उत्पन्न की हैं; दिव्य पिता यहोवा, अपनी दिव्य स्वेच्छा से, सबसे उच्च नैतिकता का चयन करते हैं; पूंजीवाद नामक विचित्र स्वर्ण जीवन प्रणाली के कई शैतानों ने, ऐसी उच्च नैतिकता वाले मनुष्यों के अस्तित्व को पूर्व से छिपाया; उन्होंने केवल उसका प्रचार किया, जो उनके लिए सुविधाजनक था, अर्थात पूर्वी गोलार्द्ध के त्रुटिपूर्ण; वे ढोंगी थे, क्योंकि उन्होंने सत्य का केवल एक हिस्सा रखा; इनमें से कोई भी ढोंगी, स्वर्ग के साम्राज्य में प्रवेश नहीं करेगा; उन्हें हर उस सेकंड के लिए मूल्य चुकाना होगा, जिसमें उन्होंने पूर्वी गोलार्द्ध में होने वाली किसी भी घटना की सच्चाई को पथभ्रष्ट किया और गलत साबित किया; उनके लिए प्रत्येक सेकंड, स्वर्ग के साम्राज्य के एक अस्तित्व को दर्शाता है; उनके नाम दुनिया की सभी भाषाओं में, सभी समाचारपत्रों में प्रकाशित किये जाएंगे; वे शर्मिंदा किये जायेंगे और उन्हें पश्चिमी गोलार्द्ध की प्रगति के पिछड़ेपन की जटिलता का दोषी माना जायेगा; शर्म से बचने के लिए उनमें से कई आत्महत्या कर लेंगे; लेकिन यदि वे हज़ार बार आत्महत्या करते हैं तो हज़ार बार फिर से

उनका पुनर्जन्म होगा; इस संसार में साजिश रचने वाला कोई भी मनुष्य, इस अनंत सज़ा से नहीं भाग पायेगा;

वे घटनाएं जो संसार में रहस्योद्घाटन के आगमन के साथ होंगी; परमेश्वर के मेमने के सूचीपत्रों का अर्थ; जिन्होंने अस्वीकार किया।

हाँ पुत्र, संसार के न्याय सार्वजनिक होते हैं; मानव आत्माओं ने पिता यहोवा से उन्हें ऐसे होने की प्रार्थना की थी; क्योंकि स्वर्ग के साम्राज्य में, कुछ भी अप्रत्यक्ष नहीं होता है; स्वार्थीपन अज्ञात है; जो भी पिता का है वो सार्वभौमिक है; अतीत में उनकी धर्मशिक्षायें भी; क्योंकि जो भी मौजूद है, उसे पिता के द्वारा ही बनाया गया है।

दिव्य स्वर्गीय समय; संसार का भावी पंचांग; भौतिकवाद की सदियों का अंत; समय की एक नयी इकाई का जन्म हो गया है; 318 दिनों का एक वर्ष;

हाँ, पुत्र; भविष्य का पंचांग, एक मंदाकिनीय पंचांग होगा; वर्तमान पंचांग का अंत आ गया है; क्योंकि इसका प्रयोग करने वाले प्राणियों के जीवन की परीक्षाओं का अंत आ गया है; जब स्वर्ग के साम्राज्य में मांगी गयी जीवन की परीक्षा का अंत होता है तो उस जीवन का भी अंत हो जाता है; इसकी अपनी समय और अवधि होती है; अपने विकास में, आपने

समय की गणना करने के लिए पंचांग का प्रयोग किया; जो जीवन की परीक्षाओं में आपकी गतिविधियों का समय था; यह समय अब समाप्त होने वाला है; क्योंकि इस संसार का अंत समय आ रहा है: ज्येष्ठ पुत्र का अवतरण; जो उन सभी चीजों को बदल देगा, जिन्हें गलत तरीके से किया गया है; सब कुछ परमपिता के ग्रंथों के अनुसार होगा; जैसा कि कई सदियों पहले कहा गया था; संसार की परीक्षा में धर्मग्रंथों से बाहर ना जाना शामिल था; इसके सूक्ष्मतम भाग में भी नहीं।

सेनाओं के दिव्य पिता यहोवा, सभी चीजों के रचयिता के लिए।

दिव्य सौर माता ओमेगा, सबसे अच्छे दोस्त के लिए।

दिव्य पहले पुत्र सौर मसीह के लिए,

इस संसार और अनंत अन्य संसारों का पहला क्रांतिकारी।

MENSAJE TELEPÁTICO DEL PADRE ETERNO AL MUNDO TERRESTRE; MENSAJE SEGUNDO; EL PRIMER MENSAJE FUÉ OCULTADO AL MUNDO POR LA ROCA RELIGIOSA
ALPHA AND OMEGA
CELESTIAL SCIENCE
CELESTIAL SCIENCE
ALPHA AND OMEGA
WHAT IS TO COME
ALPHA AND OMEGA
Telepathic Scripture
EVENTS THAT WILL OCCUR IN INDIA
ALPHA AND OMEGA